

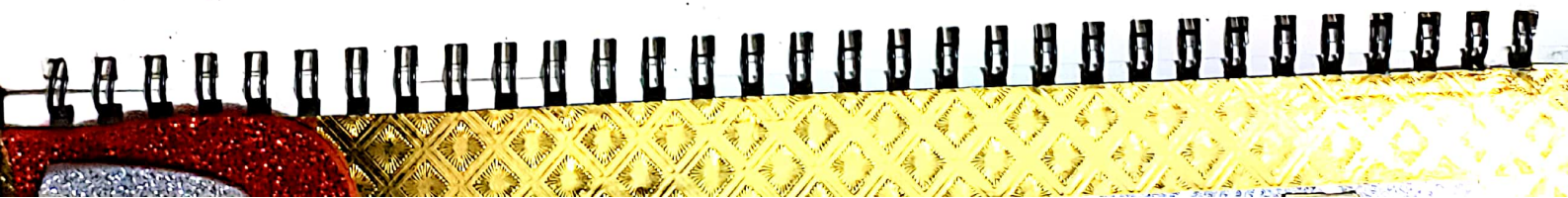


MAULANA MAZHARUL HAQUE TEACHERS' TRAINING COLLEGE MATHURAPUR SAMASTIPUR











Salayprakash Maurya
ROLL NO. 220029
SESSION- 2022-24



Tanvi Prakash
ROLL NO. 220032
SESSION- 2022-24



Gaurav Kumar Singh
ROLL NO. 220087
SESSION- 2022-24



Prakash Kumar
ROLL NO. 220090
SESSION- 2022-24



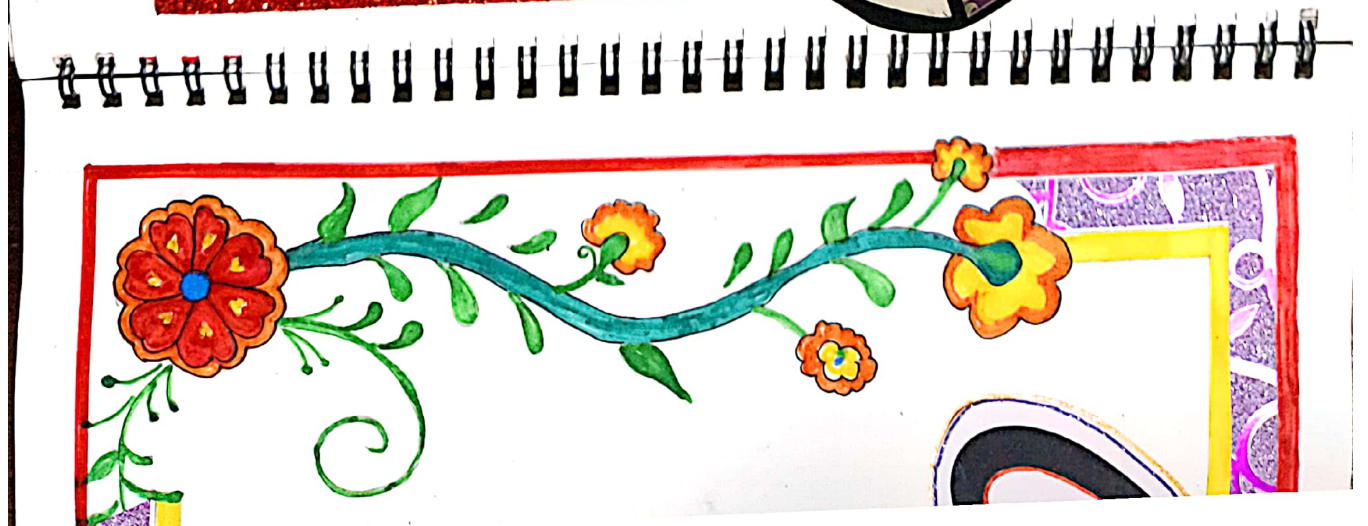
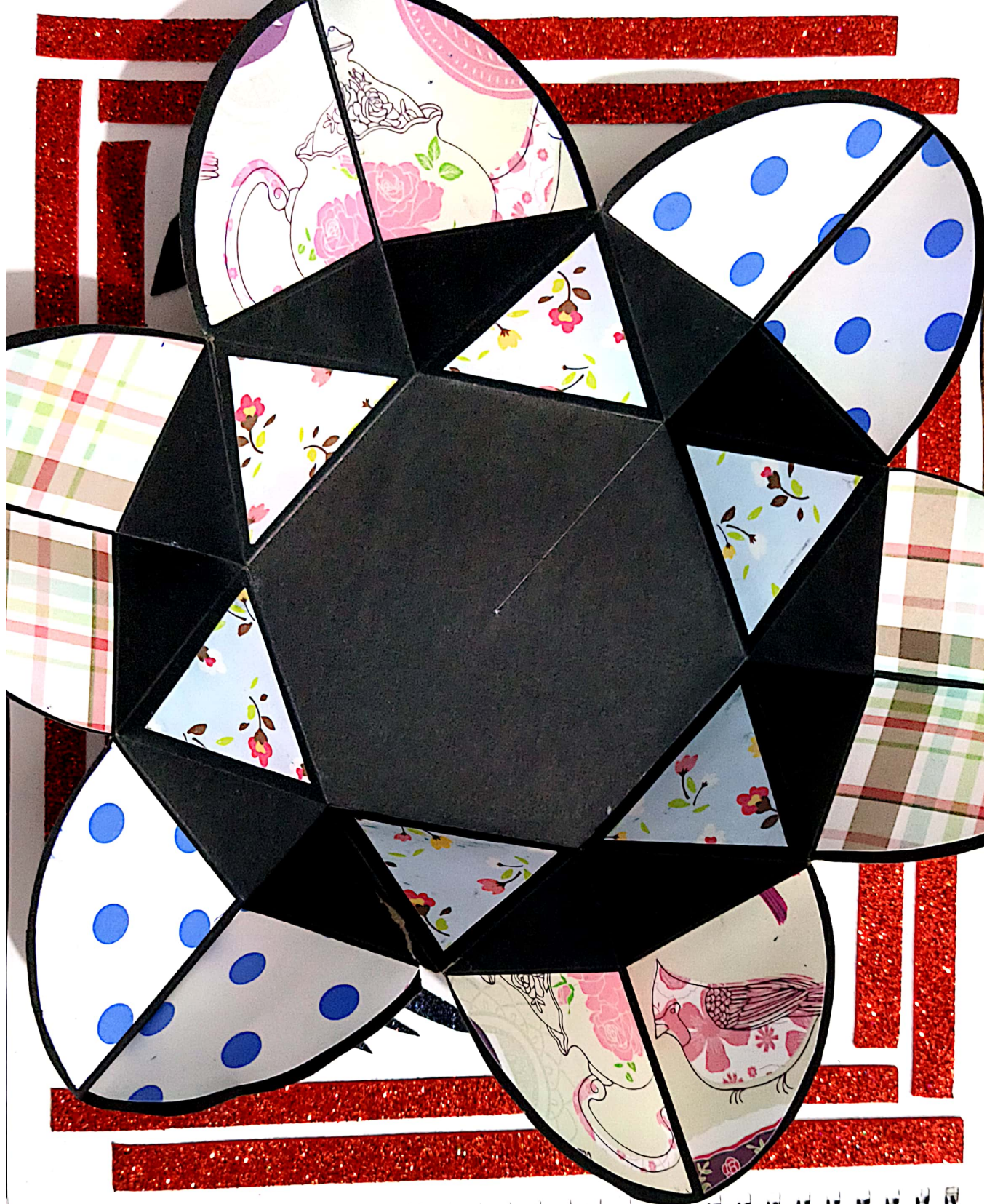
Abhinav Singh
ROLL NO. 220097
SESSION- 2022-24

Submitted To

Savita Kumari







Certificate

This is to certify that the present assignment of EPC-2 has been carried out by Tunji Peakash, Vishal Kumar, Abhay Singh, Satya Peakash Maurya, Gaurav Kumar Singh, B.Ed Part one under the supervision guidance of Smt. Savita Kumari, M.M.H.T.T. College, Mathurapur, Samastipur, in the partial fulfillment of the requirement for the degree of B.Ed.

Smt. Savita Kumari
(Assistant Professor)



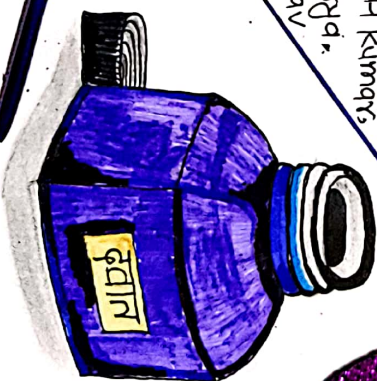
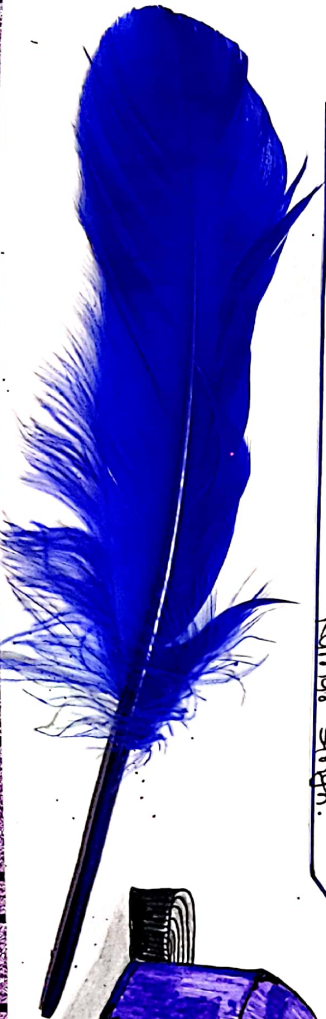
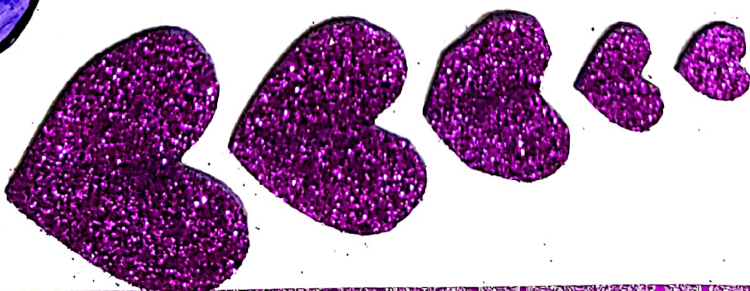
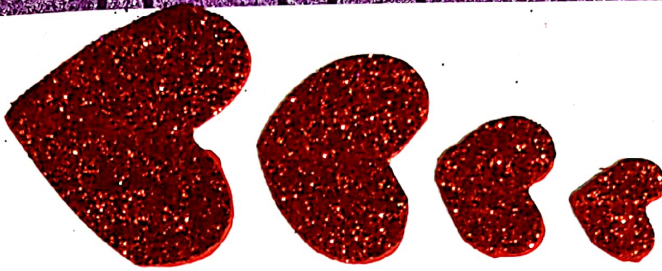
Acknowledgement

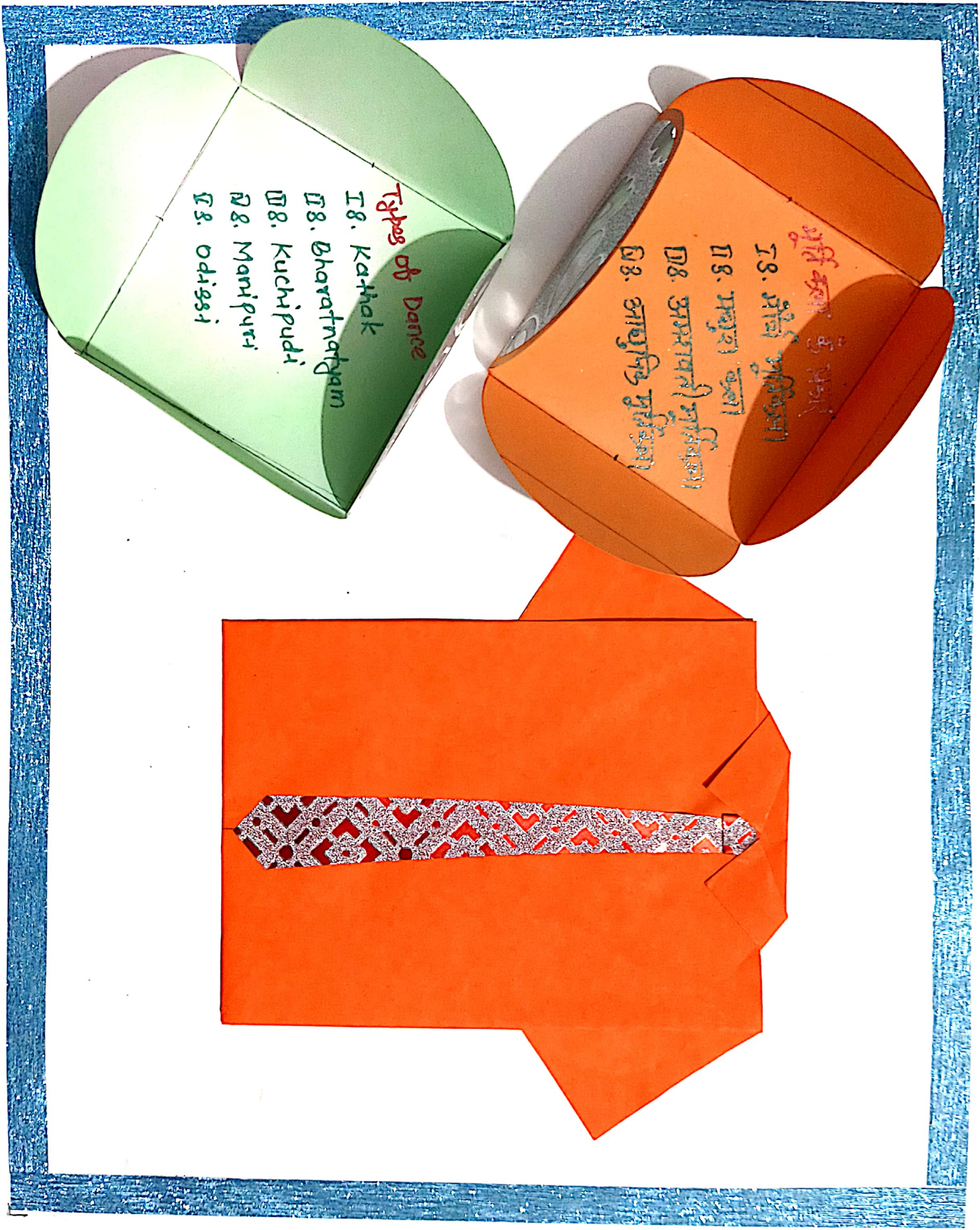
We would like to express my deepest thanks to my teacher Mrs. Savita Kumari as well as our Principle Sir who gave me the Golden opportunity to do this wonderful Project on the topic 'Drama and Art in Education' which really helped me in doing a lot of research work and taught me so many things/terms. I am really thankful to them for provided me the Possibility to Complete this Project.

Last but not the least we would also like to thanks my college and my friends who helped me a lot in finishing this Project within the time frame.

THANKS!!

Tunji Prakash, Vishal Kumar,
Satya Prakash Maurya,
Abhay Singh, Gaurav
- Kumar Singh.





Types of Dance

- I. Kathak
- II. Bharatnatyam
- III. Kuchipudi
- IV. Manipuri
- V. Odissi

ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଆ

- I. ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଆ
- II. ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଆ
- III. ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଆ
- IV. ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଆ
- V. ଓଡ଼ିଆ ଓଡ଼ିଆ

नाटक के प्रकार

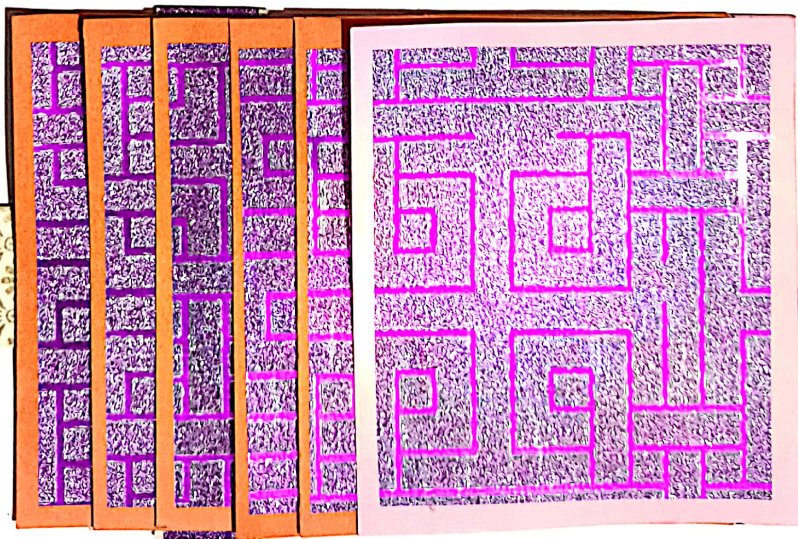
७९. सिद्धि

८९. रसिकी

१९. मंजरी नाटक

१९. मूक अभिनय

२९. नृपकंड नाटक





कला

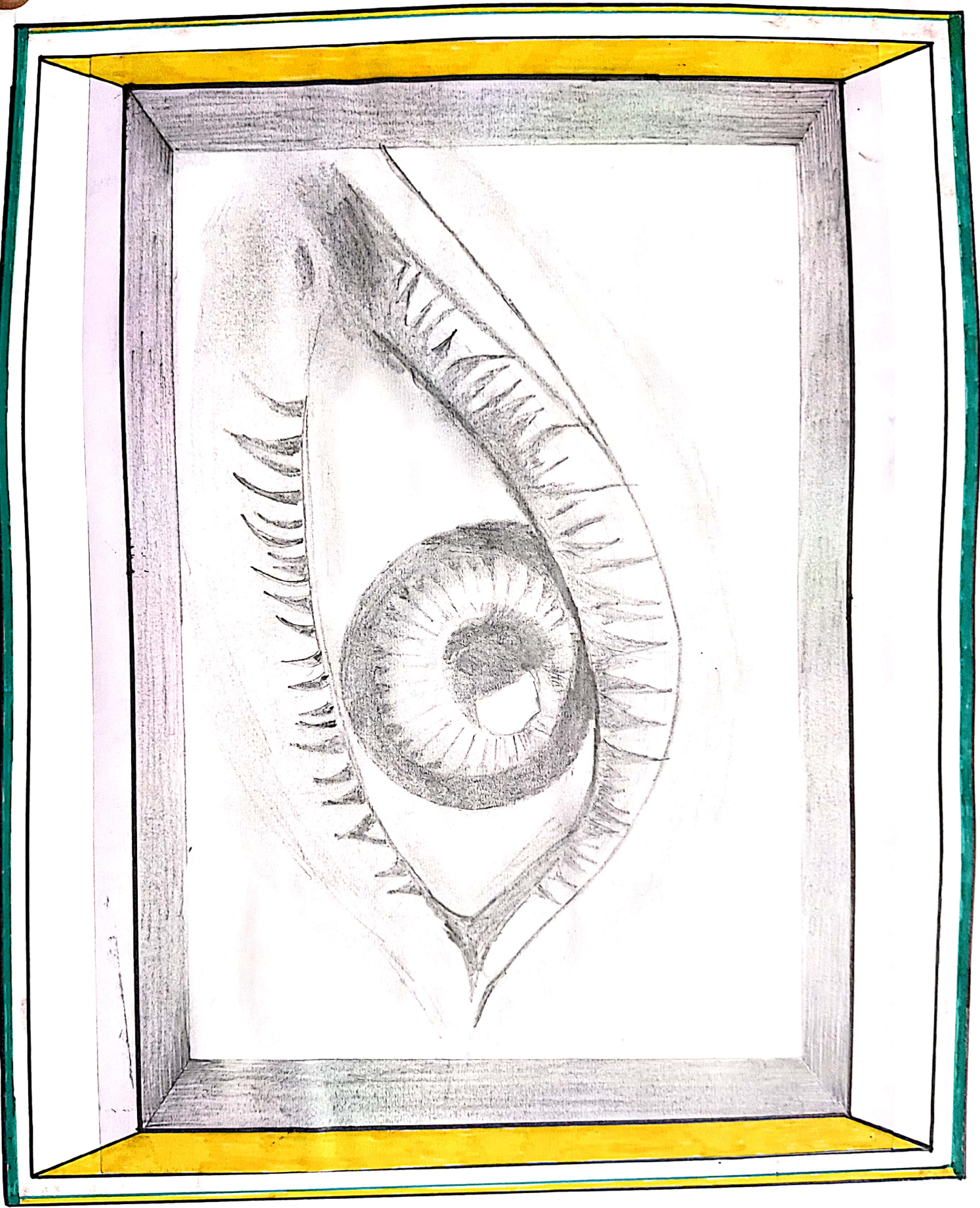
Introduction:- कला शब्द की उत्पत्ति 'क' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है सुंदर, मधुर, कोमल तथा सुख लाने वाला है। अतः जो आनंद उत्पन्न करती है, वही कला है। विभिन्न भाषाओं में कला के लिए विभिन्न शब्द प्रयोजित किये जाते हैं। संस्कृति भाषा में कला की परिभाषा है, वैदिक भाषा में कला की व्याख्या है। वैदिक भाषा के अर्थ का वही अर्थ होता है जो संस्कृत की 'अर' धातु का होता है। जिसका अर्थ है 'बसाना', 'रचना करना', 'पूरा करना' आदि यही अर्थ अर्थ का भी होता है।

श्रुति कलाकार ने इस श्रुति की रचना। आत्म संतुष्टि के लिए की है। श्रुति कलाकार एक उत्तम कौशल का कलाकार है एवं श्रुति इसकी स्वतंत्रता कला है। इसे बनाने और नष्ट करने में उसे आनंद की अनुभूति होती है। वीक उसी प्रकार से कलाकार की अपनी कलाकृति का व्योमकर्मा एवं निर्माण होता है। उसे अपनी कृति की रचना करने तथा उसे नष्ट करने में आनंद की अनुभूति होती है।

शिक्षण-अखिल प्रक्रिया में भी कला का समावेश। प्रत्यक्ष या पराक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है जैसे भाषा, अखिल में कविता की लयबद्ध प्रस्तुति, सौन्दर्यानुभूति, गीत में विभिन्न गीतगोष्ठि व्यवस्थापन, प्रतिलय, आकृतियों, इत्यादि, पर्यावरण अध्ययन के परिवेश की विभिन्न वस्तुओं का उपयोग। अतः यह लक्ष्य महत्वपूर्ण है कि कला समाजवादी अपने पूर्व अनुभवों का उपयोग कला शिक्षा तथा कला के माध्यम से शिक्षा हेतु व्यवस्था में किया जाए।

“कलाकार कोई विशिष्ट व्यक्ति नहीं होता है मगर हर व्यक्ति एक विशिष्ट कलाकार होता है।”

कला चिंतक आनंद कुमारस्वामी



DEFINITION OF ART

Definition of Art :- समग्रानुसार विभिन्न विचारकों एवं कलाकारों ने अपनी-अपनी स्मृत के अनुसार कला की परिभाषाएं विभिन्न प्रकार की की गई हैं।

“कला में मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति करता है।”

— रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार

“ईश्वर की कर्तव्यशक्ति का संकुचित रूप जो हमको बोध दे सिखाता है, वही कला है।”

— जयशंकर प्रसाद के अनुसार

“अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही ही कला है, जो अपूर्ण कला की भूमि है।”

— मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार

“कला जीवन के कड़े अनुभवों की भूमि का माध्यम है।”

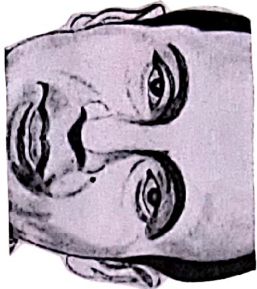
— नीलेश के अनुसार

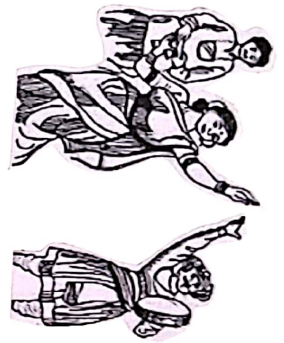
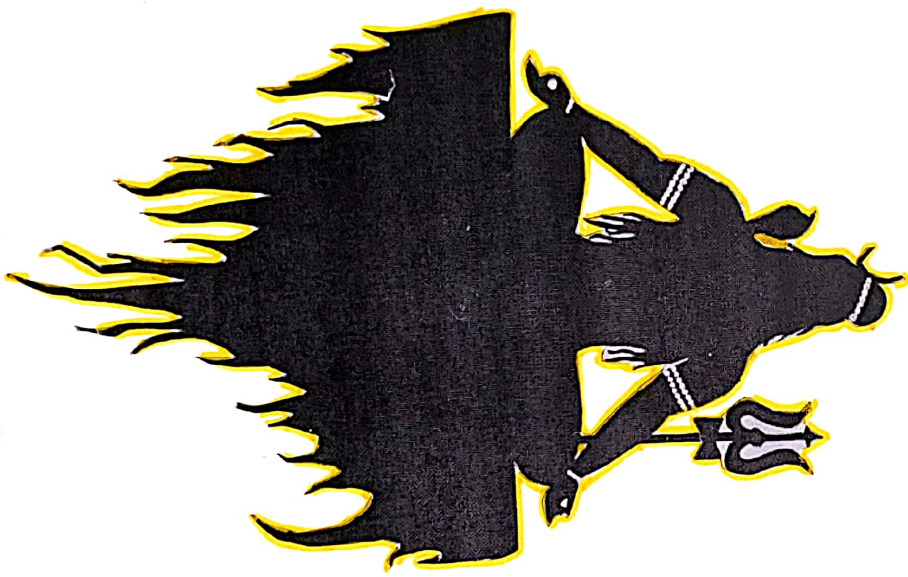
“कला दमिती वासनाओं का उभरता हुआ रूप है।”

— फ्रायड के अनुसार

“कला में मनुष्य अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।”

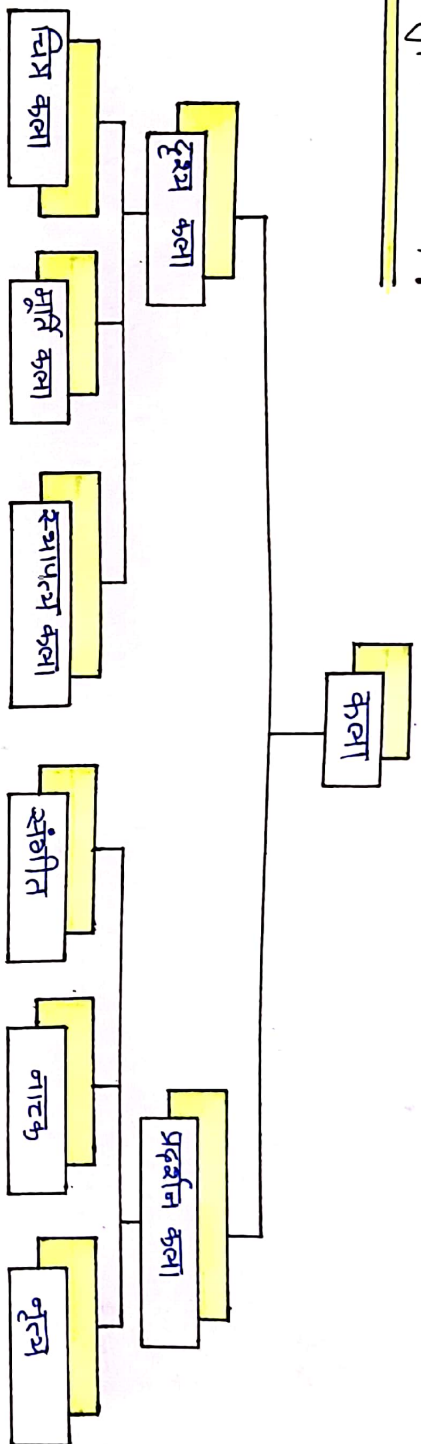
— रसिकन वर्ण के अनुसार





TYPES OF ART

Types of Art :-



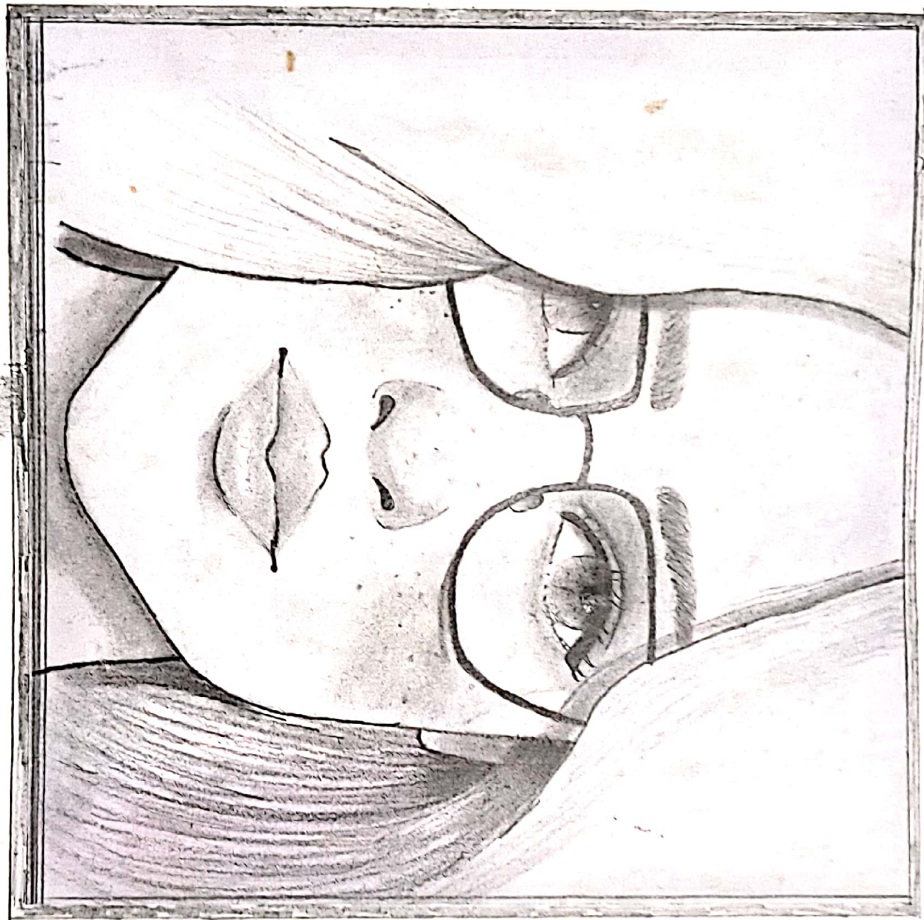
दृश्य कला :- दृश्य कला से तात्पर्य कला की उन सभी विधाओं से है जिनकी कलात्मक अभिव्यक्ति को हम मूर्त रूप से देख सकते हैं जैसे : चित्रकलाएँ, भूर्तिकला, डिजाईन, कौलाज, मुद्रण (Printing), मोज़ेक, पुतली कला इत्यादि।

प्रदर्शन कला :- प्रदर्शन कला से तात्पर्य कला की उन विधाओं से है जिसे देखना, सुनना या प्रदर्शित किया जा सके। जैसे : संगीत, नाचन, वादन, नाटक, नृत्य, पुतली, मूक अभिनय इत्यादि। इस कला की प्रमुख विशेषता इसकी झुंझ-झंझुरता है अर्थात् इस कला को हम जितनी बार अनुभव करना चाहें है उतनी बार इसकी रचना करनी होती है।

“ कला से कलाकार की पट्टान होती है। ”

“ कला सौन्दर्य की भूर्ति में बहल होती है। ”

“ कला कोई भी चीज नहीं है जो सिर्फ एक तरीका है। ”



चित्र कला :-

“ किसी भी वास्तविक या काल्पनिक वस्तु की मूर्त रूप में प्रस्तुत करना चित्रकला है। ”

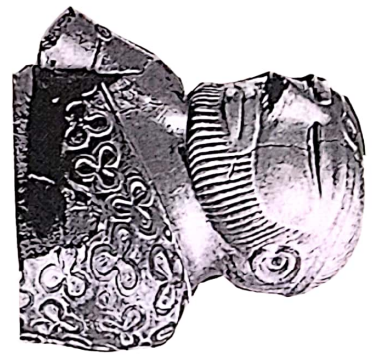
“ जब कोई व्यक्ति किसी निर्जीव या सजीव का कटी भी चित्रित या व्यवस्थित तैयार करता है तो उसे चित्रकला कहते हैं। ”

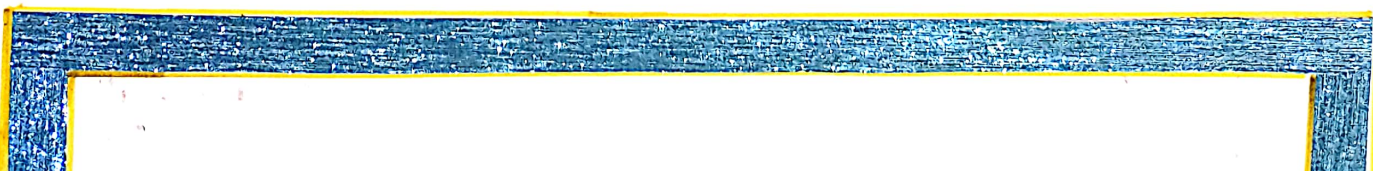
चित्रकला आकृति और रंग का समुचित प्रदर्शन है। स्वभावतः शिल्पों और कलाओं में प्रधान तथा सर्वांगीण चित्रकला की ही माना जाता है। यह माना जाता है कि चित्रकला भौतिक, शैविक एवं आध्यात्मिक भावना तथा स्वतंत्र, शिव और सुंदर की स्वभावित रूप की अभिव्यक्ति है। चित्र का स्वरूप रेखा, वर्ण, रचना और उत्पत्ति इन चारों की सहजता से बनाया जाता है। प्राचीन काल में तीन ही प्रकार के चित्र बनते थे

- भित्ति चित्र
- पट चित्र
- फलक चित्र

मूर्तिकला :- भारतीय मूर्तिकला भारत के उपमहाद्वीपों की सभ्यताओं की मूर्तिकला परंपराएं, प्रकार और शैलियाँ का संग्रह है। भारतीय भावन मन्दिर रूप से मूर्तिकला से उत्पन्न है और प्रायः एक दूसरे से अलग नहीं है। मूर्ति मानव अपने पाषाण उपकरणों की कुशलतापूर्वक काटछाँटकर विशेष आकार देता था और चमक के तुकड़े से फलक निकालते हैं 'दवाव' तकनीक या पाटकर तैयारी की तकनीक का इस्तेमाल करने लगा था, परन्तु अलग से मूर्तिकला अपने वास्तविक रूप में दृढ़ता से सभ्यता के दौरान ही उत्पन्न नहीं आई।

भारतीय मूर्तिकला की विषय-वस्तु स्त्री। स्त्रीत्व काल्पनिक मानव रूप ही है, जो लोगों की हिंदू, बौद्ध या जैन धर्म के स्तंभों की शिखा देने के काम आते थे। अनावृत मूर्ति का प्रतीक शरीर का आत्म है प्रतीक और देवताओं के कल्पित स्वरूपों की दर्शने के लिए किया जाता था। मूर्तियों में हिंदू देवताओं के बहुत से स्तंभ व गुजरों इन देवताओं के विविध रूपों और शक्तियों की दर्शने के लिए आवश्यक माने जाते थे।





MUSIC

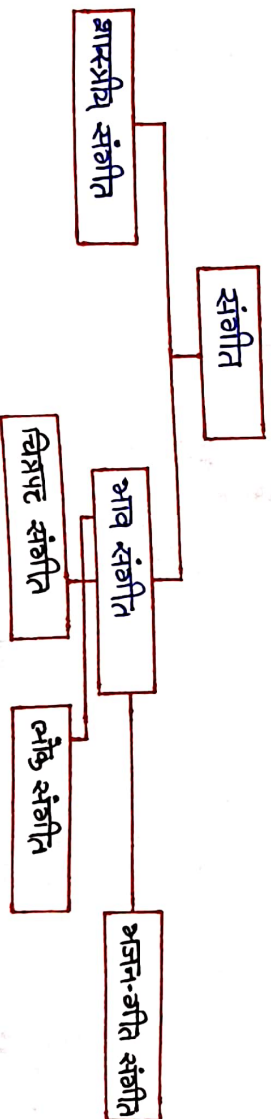
संगीत :- संगीत मनुष्य जीवन का एक आवश्यक अंग है यह प्राचीन काल से ही मानव के साथ जुड़ा है संगीत प्रकृति के फल-फूल के साथ जुड़ा है साथ जैसे विभिन्न प्राणी संगीत के आवाजों को समझते हैं और स्वयं को ऊँह करवाते हैं यह संगीत का ही प्रभाव है कि मनुष्य संगीत की भाव पर भाव की-पट्टे सहित है और पकड़ा जाता है।

संगीत का महत्व :-

मानव की संगीत के प्रति अनुभूति अत्यंत प्राचीन काल से-प्राचीन आ रही है। पंडित की स्मृतियों, जालों की प्रवाही-वहाने, सिद्धियों का-चटचटाना और यहाँ तक कि वर्षा की झंझ की आवाज ने भी मानव मन में लाव और व्यं की अनुभूति जाग्रत की है। अपने अपने अपने पदों संगीत वाद्ययंत्रों पर आस-असक्त है उठने और झुकने जैसे ही आवाज। यही देहती संगीत उपकरण अथवा-चलकर आधुनिक उपकरणों में परिवर्तित हो गए। व्यं और शब्दों के संयोजन ने गीतों या गानों की उत्पत्ति किया। संसार के प्राचीनतम गीत यों संगीत की उत्पत्ति हैं। विष्णु के प्रथम स्तर के अपने अलग-लोकगीत हैं जो देहती, आशीर्वाद लोको वाद्य गीत हैं। देहती में रहनेवाले लोगों के जीवन में संगीत भावों पुरी तरह से व्युत्पन्न हुआ है। यही कारण है कि वे वसंत, फसल, विवाह, उत्सव दिन और यहाँ तक कि मृत्यु के समयों पर भी गीत गाते गीत हैं।

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता गया, जैसे जैसे वेहतर उपकरण और ज्ञान-संगीत संगीत की नयी-नयी शैलियाँ विकसित होती गयी। पुरे विष्णु में महान संगीतकार, उन्हे स्वरबद्ध करते हैं, आर्कस्त्रा संगीत वजाते हैं और वाद्य गीत हैं। आज में हिन्दुस्तानी संगीत शास्त्रीय संगीत शैली का उद्भव उत्तर भारत में उत्तरी कर्नाटक संगीत का उद्भव दक्षिण भारत में हुआ। दोनों ही संगीत शैलियों का आज भी संगीत प्रेमियों द्वारा बहुत सराहा जाता है।

संगीत के प्रकार :-





चिप्रपट संश्लिष्ट :- फिल्मों में मैं जाने प्रयोग किने जाते हैं उसे हम चिप्रपट संश्लिष्ट कहते हैं।

“इसमें इनमें मोंरी बाजे पात्रालिया” पूर्णतः शास्त्रीय शैली होने हुए भी इसे हम चिप्रपट संश्लिष्ट में डिनते हैं क्योंकि इनका प्रयोग फिल्म में किया गया है।

लोक रीति :- यह मुख्यतः ह्रीतीय या रामायणों का रीति है। इन रीतियों में रईयों वरों रईयों आये रीति रिवाजों की सलक मिलती है। इसमें अंतर्गत शाही व विभिन्न रईयों में गये जाने गये रीति है। आधिकार लोक रीति के अन्तर्गत लोक वजायि जाती है। इनके कुछ नाम भी हैं जैसे :- रीति, फजरी, कादरी, इत्यादि।

अजन रीति :- जिन रीतियों में ईश्वर का गुड़ गान या प्रार्थना की जाती उसे हम अजन कहते हैं।

जिन कविताओं की रचने तक गरीब रईयों गाय जाते उनमें रीति कहते हैं। इन रीतियों में कोई वंदन नहीं होता, आधिकार रईयों तक कहला जाते हैं होते हैं।

भाव संश्लिष्ट :- भाव संश्लिष्ट की लाइव म्यूजिक भी कहते हैं। भाव संश्लिष्ट में शास्त्रीय संश्लिष्ट के सजावन न कोई वंदन होता है और न ही की नियमित शास्त्र होता है। भाव संश्लिष्ट का भास एक उद्देश्य होता है कानों की उत्तक लगाना। अतः इसमें कोई वंदन नहीं होता हम चाहें इस रचने का प्रयोग करें जिस लाव, जिस रईय में गाय जब अलाप गान रईय वर कानों की अनुने में उत्तक लगे। भाव संश्लिष्ट की रईयकला (मधुरता) वदने के लिए कभी-कभी शास्त्रीय संश्लिष्ट का सहाय्य लिया जाता है।

शास्त्रीय संश्लिष्ट :- उत्तमान भाव में शास्त्रीय संश्लिष्ट उसे कहते हैं जिसमें नियमित शास्त्र होता है। जिसमें कुछ विशिष्ट नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए हम शास्त्रीय संश्लिष्ट के गानों में कुछ विशेष नियमों का पालन करना पड़ता है। गान के नियमों का पालन न करने रईय गान होने नहीं है।

शिक्षा में संश्लिष्ट का महत्व :- वर्तमान समय में अधिक तकनीकी विकास की सहायता रईय अनेक प्रकार की तकनीकों के मिश्रित रूप की विस्तारित किया गया है। तकनीक संश्लिष्ट में कई प्रकार की शैलियों जैसे - पॉप, रॉक, रैबी, शास्त्रीय, आदि शास्त्रीय, लोक संश्लिष्ट गान रईय को समर्थित है। कई कम्पनियों हैं जो संश्लिष्ट गैरार कवरगी हैं और उनमें अनेक आदि वन-वाक्य वाक्य में वेचती हैं।

कुछ संश्लिष्ट कुछ नया। गैर करने के इच्छा रईय विभिन्न शैलियों के संश्लिष्ट की जैसे शास्त्रीय एवं गैर का मिश्रण करते हैं। अन्य-गैरों की तरह ही लोक संश्लिष्ट में भी नवीनता अनुकरण चाहते हैं।



DRAMA

नाटक (Drama) :- शब्द "Drama" ग्रीक शब्द "ड्रामाई" से आया है जिसका अर्थ है अभिनय करना। नाटक किसी विषय कहानी या स्वभावों की अभिनय के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने की कलात्मक प्रक्रिया है। जब एक नाटक का निर्माण किया जाता है तो उसमें निर्माण में कई सहयोगी क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। एक नाटक के चिह्नित तत्व होने हैं जो कलाओं एवं कलाकारों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं सहयोग के उद्घाटन पूर्ण होते हैं।

Definition of Drama :- नाटक एक प्रकार का साहित्यिक कार्य जो आशयपूर्ण और संवादी के माध्यम से एक जीवन चित्रित करता है जो कई चरित्रों में संघर्ष प्रकट करता है। उसे ही Drama (नाटक) कहते हैं।

“नाटक एक जीवन कहानी है जिसे आशयपूर्ण या कारवाही के रूप में कहा जाता है।”

— मैक्लिन के अनुसार

“नाटक एक कथा है जो प्रकृति और मानव प्रकृति की गति में दर्शाती है।”

— लेन्ग्युअर एल्डहोन के अनुसार

“नाटक एक कहानी है जिसे शब्दों और आंदोलनों के माध्यम से बताया जाता है।”

— ऐनी सिवाडी के अनुसार

Types of Drama (नाटक के प्रकार) :- नाटक को नाटक, विलक्षण मीडिया और मिश्रित के आधार पर कई प्रकारों में विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित हैं।

Lakonan के आधार पर नाटक के प्रकार :-

I. Tragedy :- Tragedy एक नाटक है जो नाटक में नायक के दुष्प्रभाव को बताता है। अन्तर्गत पर, नाटक एक दुष्प्रभाव कहानी के साथ सम्पादन होता है।

II. Comedy :- Comedy एक नाटक है जिसका संवाद संश्लेषण के साथ वाचन को अन्य होता है।

III. Comedy :- Comedy एक दृष्टांत है, जिसमें मजहूर चरित्रों या नाटकों की छवि बनायी जाती है। यह नाटक अन्तर्गत पर एक उद्घाटन कहानी के साथ सम्पादन होता है।



IV. Farce :- फर्स एक Drama है जो अभिनैताओं के काम के माध्यम से मजेदार चीजें दिखाता है जैसे की अप्पड़ भरना वीकिन पूरी तरह से ब्लैपस्चिट्च जैसा नही है।

V. मैलौड्रामा :- मैलौड्रामा एक नाटक है जिसका संवाक और नाटक संबंधित या मार्चुज के साथ खोला जाता है। मैलौड्रामा खराब खोपरा से मिलता जुलता है क्योंकि दोनों संबंधित या मार्चुज का व्यवहार करते हैं।

संचयी नाटक

सामान्यतः संचयी नाटक की प्रस्तुती मंच पर होती है। नाटकों के मंच की पैचारी विशेष प्रकार से किया जाता है। मंच पर प्रकाश, पर्दा एवं विद्युत आदि दि व्यवस्था की जाती है।

भूक अभिनय

इसमें व्यक्ति अपने भावों व शरीर की गतिविधियों के माध्यम से प्रदर्शन करता है। इस अभिनय में व्यक्ति बोलता नहीं है। इसमें एक ही व्यक्ति अलग-अलग किरदारों की भूमिका निभाता है। लेकिन वह अपनी स्वयं की आवाज का प्रयोग करता है।

मिमिक्री

इसमें व्यक्ति अलग-अलग किरदारों जानवरों व अलग-अलग आवाजों की प्रस्तुत करता है। वह उनकी भूमिका निभाता है बल्कि उनकी आवाज का प्रदर्शन करता है।

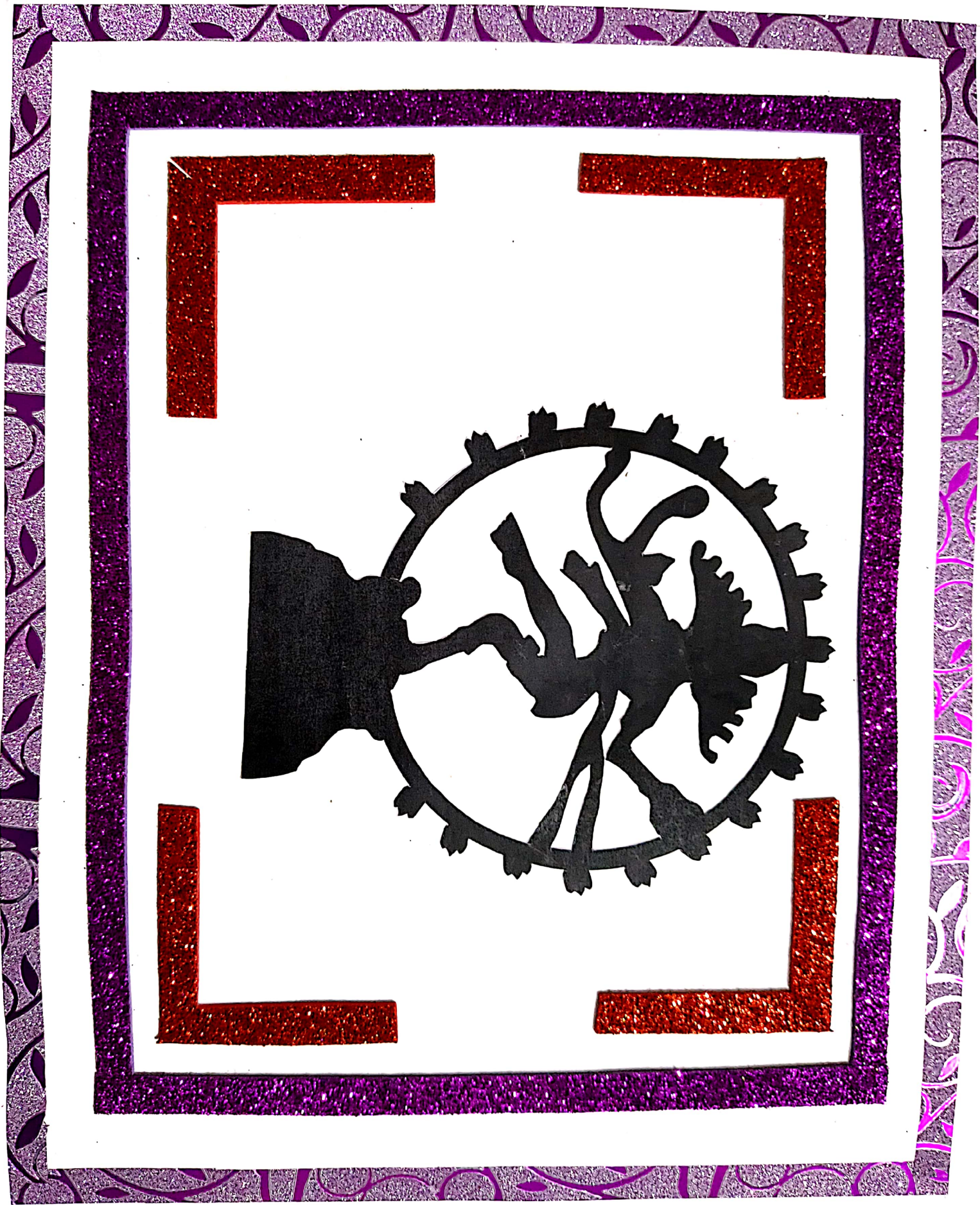
एकंकी

एक ठाँक वाले नाटक की एकंकी कहलाता है। संश्लेषण पर एकंकी किसी चटनाक्रम के किसी पक्ष की स्थापक भाग है।

नुक्कड़ नाटक

जैसा की नाम से पता चलता है कि नुक्कड़ पर की जाने वाली नाटक नुक्कड़ नाटक कहलाती है।

Educational Importance of Drama :- शिक्षा में नाटक का महत्व इस प्रकार है जो की शिक्षा चाहे वह स्कूल स्तर की हो, कॉलेज स्तर की हो या विश्वविद्यालय स्तर की नाटक हर स्तर पर शिक्षक एवं विद्यार्थी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। नाटक द्वारा विद्यार्थी का मानसिक स्तर विकसित होता है और वह स्वयं को एवं दूसरों की समझने में सक्षम हो जाता है।



I. नाटक वास्तविक जीवन का हिस्सा है और जीवन की समस्याओं से निपटने के लिए काम की है।

II. नाटक आज ही सचनान्तक स्मरण। समाधान और निर्णय देने में सहायक है।

III. नाटक भौतिक और आध्यात्मिक संसार का विकास करता है।

IV. यह काम के मनोवैज्ञानिक कल्याण की वृद्धि करता है।

V. यह सहजता से व्यक्त और सामाजिक कौशल विकसित करता है।

VI. यह जुड़ाव के माध्यम से एकता और समन्वय की वृद्धि करता है।

VII. यह काम के भौतिक मुद्दों पर विचार करने और मूल्यों की विकसिति करने में मदद करता है।

VIII. यह व्यक्तिक विकास में योगदान देता है।

IX. यह संसार कौशल की वृद्धि देता है। ज्ञान, कर्म, सेवा, आतमी, समाजिक।

X. यह भाषा कौशल विकास करने में मदद करता है।



DANCE

Dance (नृत्य) :- नृत्य भी मानवीय अभिव्यक्तियों का एक ससम्पन्न प्रदर्शन है। यह एक सार्वभौमिक कला है, जिसका जन्म मानव जीवन के साथ हुआ है। बालक जन्म जैसे ही सीकर अपने हाथों और पैरों द्वारा अपनी अभिव्यक्ति करता है कि वह बूझा है इन्दी आंखों से नृत्य की कल्पना हुई है। भारतीय जनता के चर्म तथा वस्त्रों में नृत्य ने एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया था। जबकि आज प्रचलित शास्त्रीय नृत्यो या 'कला' के नृत्य में परिचित विभिन्न नृत्यों के विकास और निश्चित इतिहास की स्वीकारिता करना असम्भव नहीं है।

साहित्य में पहला संदर्भ वेदों से मिलता है। जहाँ नृत्य व संगीत का उल्लेख है। नृत्य का एक ज्यादा सौम्य इतिहास महाकाव्य, अनेक पुराण, नाटकों का समृद्ध स्रोत जो संस्कृत में काल और नाटक के रूप में जाने जाते हैं। यहाँ 12 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक अनेक प्राकृतिक रूप हैं। जिन्हें संगीतकार और या संगीत नाटक कहा जाता है।

Definition of Dance :- संगीत के साथ ताल स्वर के अनुसार नाचना या ऐसे ही हाव-भाव दिखाने हुए उल्लेखना, चुमना और इसी प्रकार की दूसरी-चौड़ाई करना Dance कहलाता है। जब हम नृत्य करते हैं तो हम अपने शरीर और पैरों को इस तरह से चुमते हैं, कि वे अपनी ताल का अनुसरण करने लगते हैं, आमतौर पर संगीत के साथ ही। हम राज्य और देश का अपना-अपना नृत्य होता है, लेकिन सभी में एक ही वस्त्र पहने होते हैं और वह है Rhythm के साथ शरीर की चुमना और पहचान।

प्रत्येक राज्य का अपना-अपना नृत्य कला का तरीका है जैसे उत्तरप्रदेश में कसक, पंजाब में बांग्ला आदि। भारत के संगीत नाटक अकादमी ने मुख्यतः 8 शास्त्रीय नृत्य के नाम सुझाये हैं:-

क्र.सं.	भारत के शास्त्रीय नृत्य	राज्य
1.	भारतनाट्यम	तमिलनाडु
2.	कथक	उत्तरप्रदेश
3.	कर्नाकली	केरल
4.	कुचिपुडी	आंध्र प्रदेश
5.	ओडिसी	उड़ीसा
6.	मणिपुरी	मणिपुर
7.	सोनित्रा	असम
8.	मोहिनीअट्टम	केरल



Meaning of Dance :- ज्ञान, ब्रह्म, ज्ञाना ।

Types of Dance :-

- Bhara-f-na-f-gam (भारतनाम) :-

- भरतनाट्यम नृत्य में शरीर की गति की तकनीक और व्याकरण है। अद्ययन के लिए नैतिक और धार्मिक अभिनय दर्पण पाठ्य सामग्री है मुख्य स्त्रोतों में से एक है।
- भरतनाट्यम नृत्य की एकद्वारा है रूप में जाना जाता है, जहाँ एक नर्तक एक ही महर्षि में कई श्रुतिकारों निभाता है।
- नृत्य में पैर, कूल्हे और बांह की संक्रमणकालीन गति शामिल होती है। आवाजों की व्यक्त करने के लिए अभिव्यंजन जैसे आँखों और हाथ के इशारों को उपयोग किया जाता है।
- स्वभाव वाले ऑर्डिनेट्स में एक वाक्पक, एक मूलबोध वाक्पक, वाचविन वाक्पक या वीणा वाक्पक, एक वास्तविक वाक्पक और एक स्वांक्ष वाक्पक होते हैं। जो व्यक्ति नृत्य पार्श्व को संचालन करता है वह नाट्यदर्शन है।
- अपने स्वभावपूर्ण रूप में नृत्य की आज तीरे पर स्वात मुख्य भावों में विभाजित किया जाता है - अल्लारीपु, गतिस्वरन, बालन, वर्ण, पाड़ा, थिल्लाना और वत्सिका ।
- भरतनाट्यम मुद्राओं की चिह्नबोध महर्षि (तामिलनाडु) के गोपुरमों पर चित्रित किया गया है।
- ई. कुल्ला अग्रिम और रंगविभगी देवी अंकंडेल ने नृत्य की उसकी स्त्रीई हुई लोकप्रियता और स्थिति की वापस दिखाने में महत्वपूर्ण श्रुतिका निर्धार दी।

- Kathak ($\sqrt{21}g$):-

- कथञ्च श्रावक की उपाधि क्या। श्रावक ही दुई हैं जिसका उद्भव कहानी है।
■ यह भुज्या स्वयं ही एक मंदिर या गाँव का प्रवर्धन या जिसमें नरिष्ठ प्राचीन शास्त्रों से कथानियों
व्युत्पत्ति में।
■ पञ्चद्वी. और सोमद्वी. शतावली में अति आलोचना के प्रसार के साथ कथञ्च नृत्य की एक विशिष्ट
विद्या के रूप में विकसित होने लगा।



● Kuchipudi (कुचिपुडी) :-

- कुचिपुडी आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के एक गाँव का नाम है। जिसमें नृत्य-नाटक की बहुत बड़ी परंपरा रही है। इसे राजधान के स्वाम्य नाम से जाना जाता था।
- इसे नृत्य नाट्य के रूप में प्रचलित किया जाता है अर्थात् स्मृति में प्रदर्शन और एकत्र आइस के रूप में भी।
- वैशाखा, आश्वयुज और आश्वयुज एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।
- एकल आइस है मंडक डाकम (मंदक युवती की कहानी), बालगोपाल तरंगा (रि पर पानी से भरे बड़े के साथ पीतल की थाली के किनारे पर नृत्य) और लाल चिर नृत्य (नृत्य करते हुए भरे की ठोलाचियों के साथ चिर बाना)।
- यामिनी कृष्णमूर्ति और राजा रूडि प्रमुख नर्तक हैं।

● Mohiniyattam (मौहिनीअटम) :-

- मौहिनीअटम या मौहिनी (शिवान विष्णु का एक अवतार) का नृत्य केरल का शास्त्रीय एकल नृत्य रूप है।
- मौहिनीअटम के स्वरूप 1709 में मद्रमगलम नामधरान नैपुतिरी द्वारा लिखे गए व्यवहारमात्र। यंत्रों और वाद्यों में कवि कुंजन गोविंदार द्वारा लिखित योग्यता में पाए जा सकते हैं।
- ज्यादातर गौलाकार-नाच, नाचक कर्मों और स्वरूप भावों के साथ व्यक्तियों द्वारा। एक प्रदर्शन।
- आंगोवनो की गौगार कुंज और मादिल। लोक नृत्य कैकोटिकली और तिक्कतिरकली से उधार लिया गया है।
- इसमें भरतनाट्यम (अनुकूल और बालिक्य) और कथकली (लोक) के लक्ष्य हैं, लेकिन यह आधिकारिक, शीतलम्ब और नाचक है।
- यथार्थवादी मैकअप और साधारण ड्रेसिंग (केरल के कसाबू शादी में) का उपयोग किया जाता है।
- रति मणिप्रवाल (लमिग-मलयालम) और बंसकन की मिलाकर एक मह्यकालीन लुटि। भाषतीय भाषा में है।
- न्युनका नाम और पल्लवी कृष्णन अवैवनीय कलाकार हैं।



■ भाँपुड नृत्य का एक बड़ा प्रदर्शन है, हावांदि, सवसे लफ़ाप्रिय नृत्य सारा, रसकीर्न अरुँध थाँवा- ना है।

■ सामुहिक बावन का कीर्न नृत्य है बाबा हाँत है। इसे भाँपुड में रसकीर्न है नृत्य में जाना जाता है।

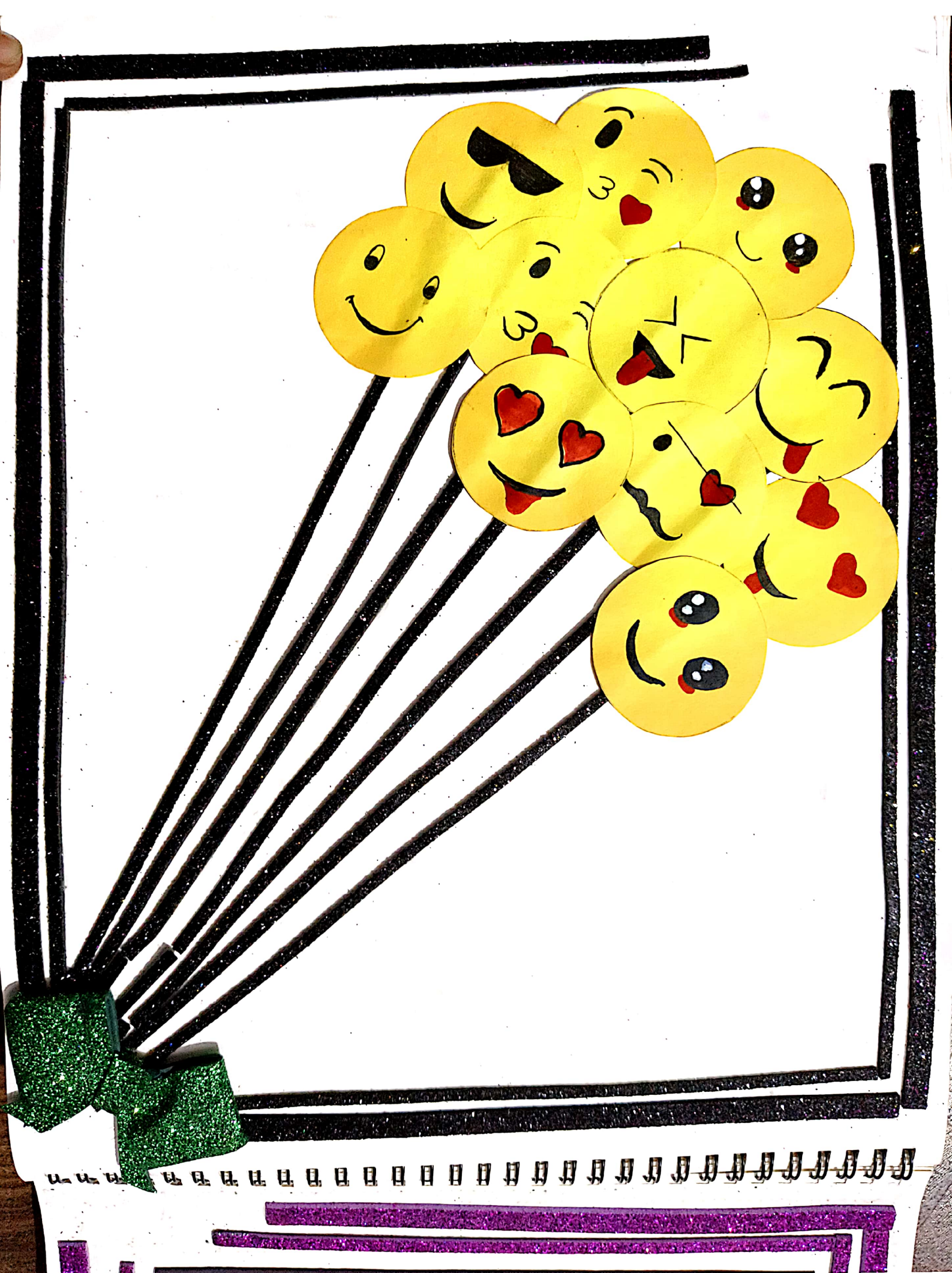
• पुनन नर्तक नृत्य करते समय पुँडा अरुँध करताव बजाते हैं।

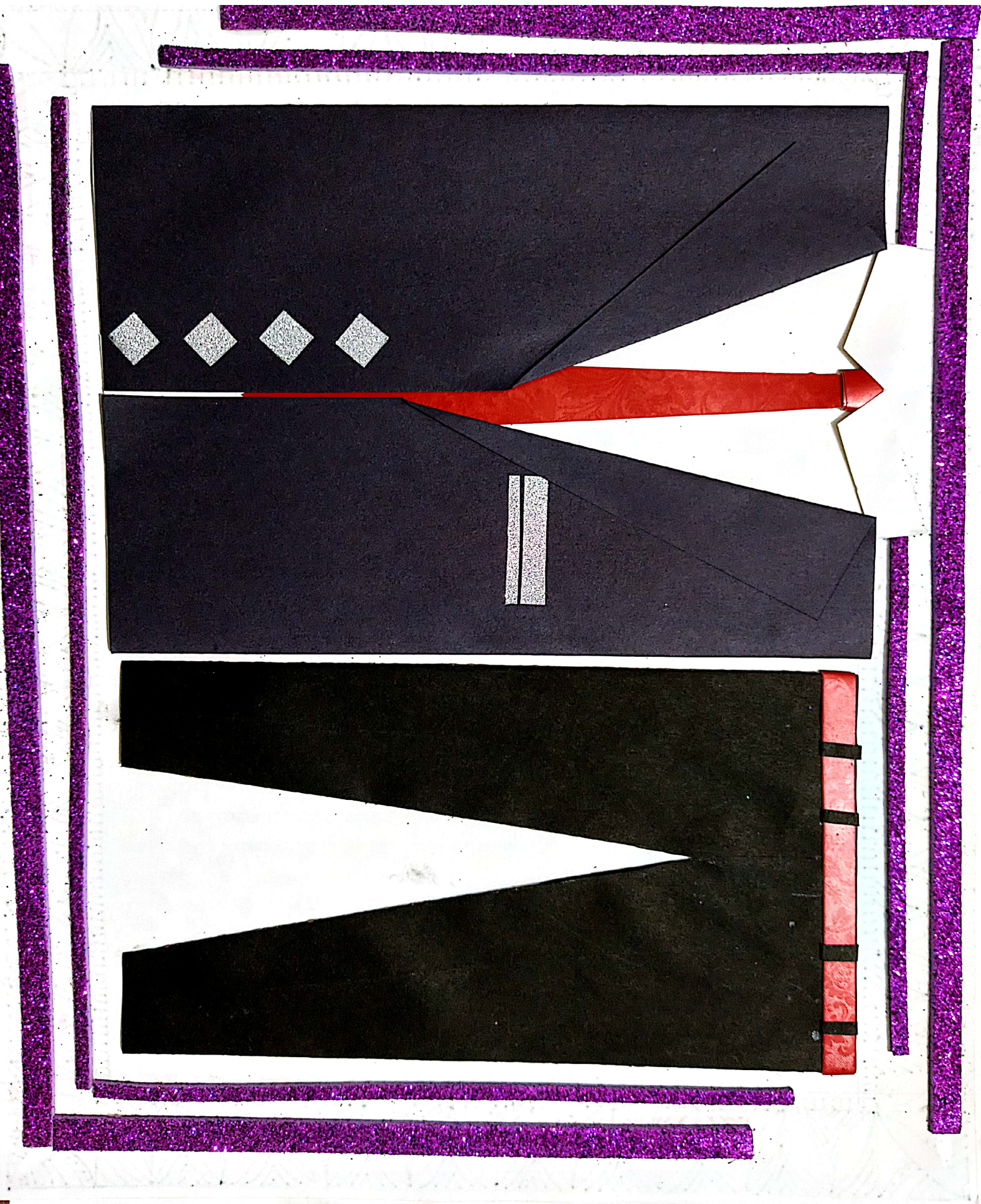
■ नर्तक एक नाच प्रदर्शन में नाच पर मुख लवाने है। लिर टप्पने की लई नही पकने है, क्योकि यह नाचक बरुँध की गतिविधियों में हस्तशीप करता है।

Educational Importance of Dance:-

नृत्य में शिक्षा। विद्याभियो की शारिरिक नृत्य रस रसहम बनता है। नृत्य कल्याण का प्रतिक है, यह मानव में आनंद का रसचार करता है। यह आत्मविश्वास में वृद्धि करता है, नृत्य की शिक्षा बहाल करते समय बावक-बाविकाएं नृत्य रसिबने है वीरान पदश्रम करना रसिबने तमा। उनमें अनुशासन का भाव जागृत होवा।

नृत्य बाबा बरुँध लचीला, खुठाति एवं मसिनक वलरस होता है। नृत्य वृजनात्मक एवं कल्पनाशक्ति का विकास करता है। जब लत्ते विभिन्न मुद्राओं बाबा प्रस्तुति करेते ती उनमें अनुशासित रहकर कार्य करने की प्रवृति का विकास होवा। लत्ते की नृत्य है माह्यम रस रसकरो रस पदिति करावा जा सकता है। यह प्रसन्नतापुर्क कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है।







मिथिला पेंटिंग :-

मिथिला पेंटिंग पारंपरिक रूप से भारतीय उपमहादीप के मिथिला क्षेत्र में विभिन्न समुदायों की महिलाओं के द्वारा बनाई गई थी. मछुबनी कला मिथिला उन्नति बिहार में प्रचलित एक लोक चित्र कला है। इसकी उत्पत्ति बिहार के मिथिला क्षेत्र के मछुबनी जिले से हुई है. जो भारतीय उपमहादीप के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित है।

मिथिला पेंटिंग भारतीय चित्रकला की एक शैली है. यह पेंटिंग विभिन्न प्रकार के औजारों से की जाती है. जिसमें ठंगलियों, टहनियों, लृश, निव-पैन और माट्रिक्स की तीली और प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। मछुबनी पेंटिंग प्राचीन महाकाव्यों के लोगों और प्रकृति और देवताओं के साथ ठगने जुड़ाव को दर्शाती है।

मछुबनी पेंटिंग में शाही दरबार के दृश्य और शाही जैसे सामाजिक आयोजनों के साथ-साथ रंग, चंद्रमा और तुलसी जैसे धार्मिक चीजों जैसे की ओ ल्यापक रूप से चित्रित किया जाता है। स्वामी जगहों को फूलों, जानवरों, पक्षियों के चित्रों से भर दिया जाता है।

PROTILE PCT-2

अर्थ

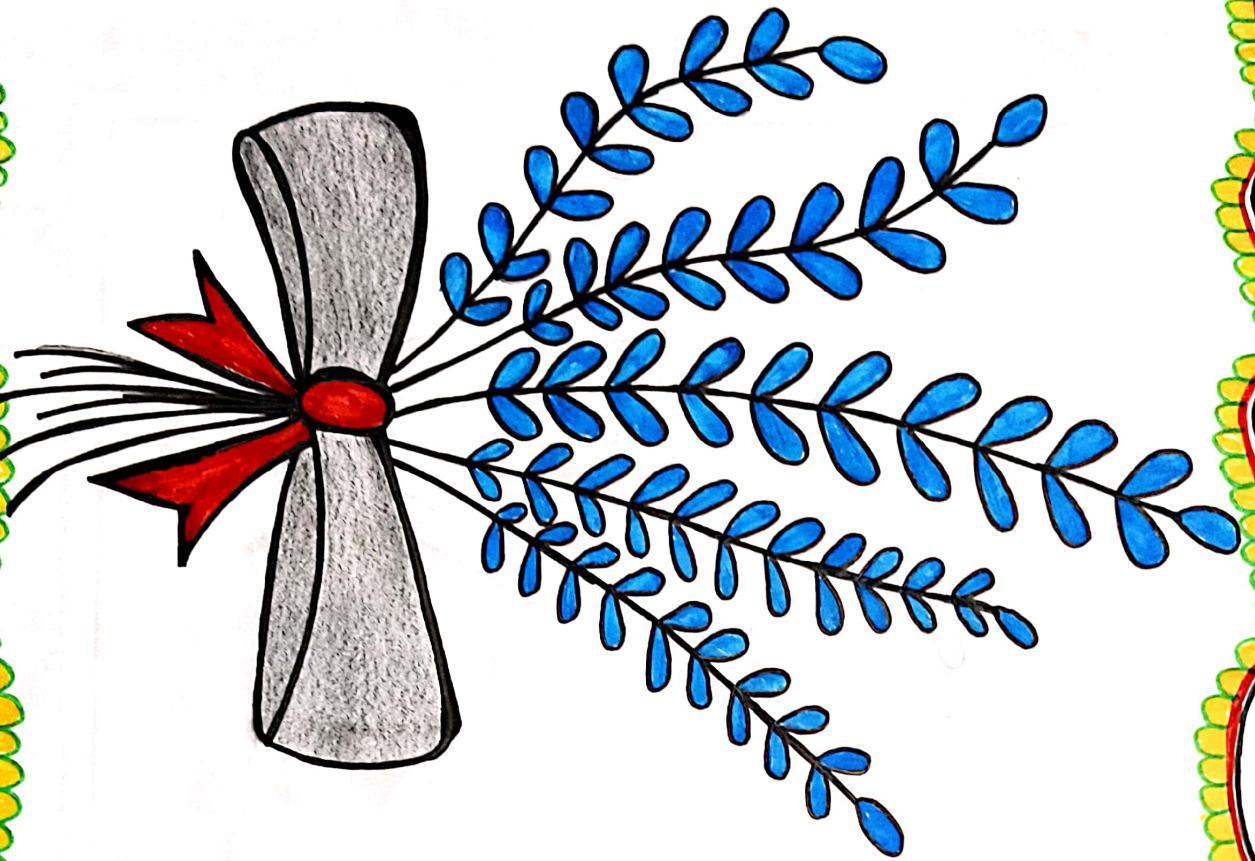
आज

ART
IN

EDUCATION

Submit to
Savita main

Submit by
• Prema Kumari
• P. P. P. P. P.
• Anamika Rongam
• H. H. H.
• R. R. R.
• P. P. P.



Aaravika Kuri
220066



Puja Kuri
220034



HARSH RANJAN
20024



ADARSH K.
220061



PRINCE K.
220012



Kuri Rajanika
220035



PRENNA
220046



INDEX

S.No	TOPIC	Page no
01	Forms of Drama	1 to 2
02	Playing Drama	3 to 4
03	Importance of Art Education	5 to 6
04	Appreciating Visual arts and craft in Teachers	7 to 8
05	Concept of Handicrafts. Kashmir Embroidered shawls and Mysore silk Sandal wood Items, Kerala Ivory carving	9 to 11
06	Mithila Painting (Regional Folk)	12 to 13
07	Indian Craft Traditions. Types of Crafts. Paper crafts, Decorative crafts	14 to 15
08	Importance of Visual Arts and Handicraft in Education.	16

Forms of Drama

01

The actor or actress sometimes play a drama in 'solo' and sometimes in 'group' and play role of different characters. Hence from this point of view, drama is classified into two forms —

Solo Drama



Solo drama refers to as a one-man show or one woman show. It can boost cognitive development. A person telling story for an audience for the purpose of entertainment.

This type of drama comes in many varieties including —

- Autobiographical creations
- Poetry.
- Comedy acts
- Novel adaptations.

This form is played by the teachers in the classroom while teaching learning process. A teacher performs to teach any topic solemnly in the class-room and much benefitted.

Group Drama

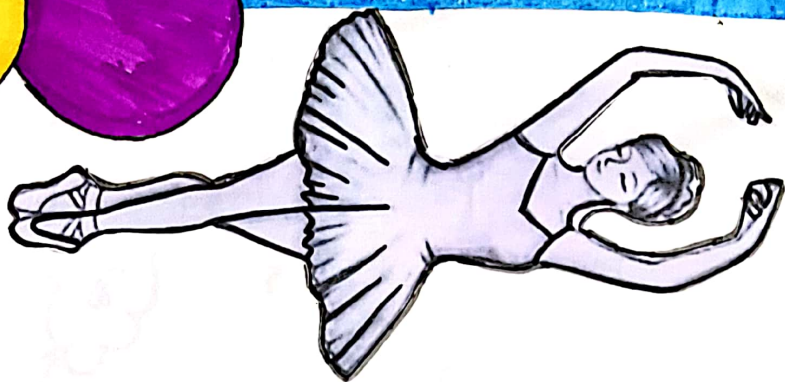


A group drama or play is that drama in which two or more persons act to present a story or subject. The main quality for group drama is efficiency in trust.

In this drama two or more person play their roles of any story which present a conclusion.

Group drama is very useful in the relevance of education and in teaching-learning process in the class-room.

It encourage children to co-operate and it also helps in understanding the world around them. It is also important from the literature point of view.



Solo
Dranga



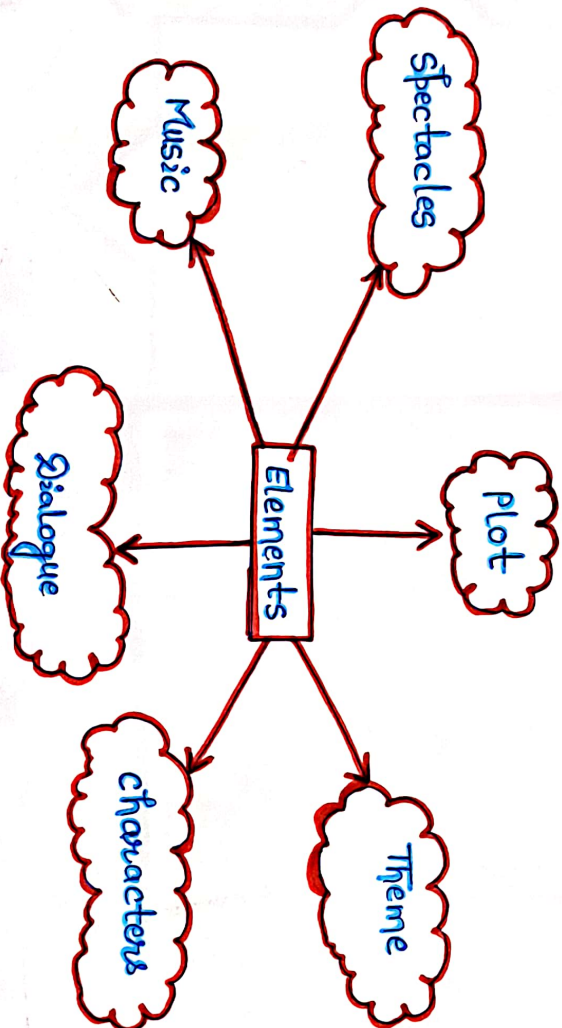
Group
Dranga

Playing Drama

Drama is the artistic process of conveying any subject, story problem to the people through acting. When a play is played many cooperative activities are involved in its creation. Relationships and collaborations are followed by forms.

Various major arts involved in drama — STORY TELLING, DIALOGUE, CHARACTER, MAKE UP, SITUATION etc.

* Elements of Drama — According to **ARISTOTLE**, there are **6** elements of drama.



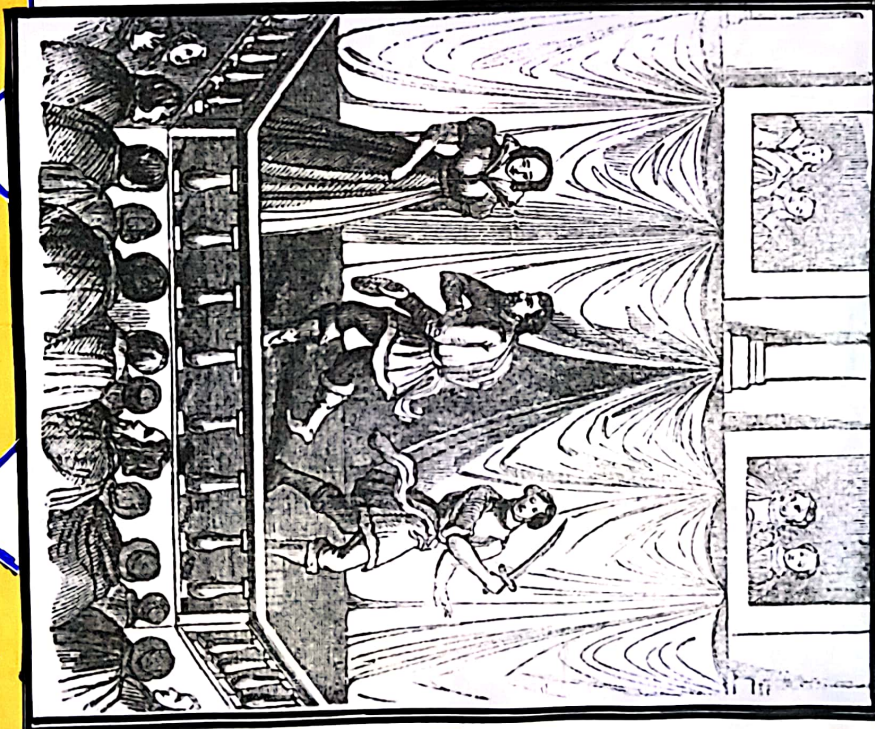
• **Nature of story :-**

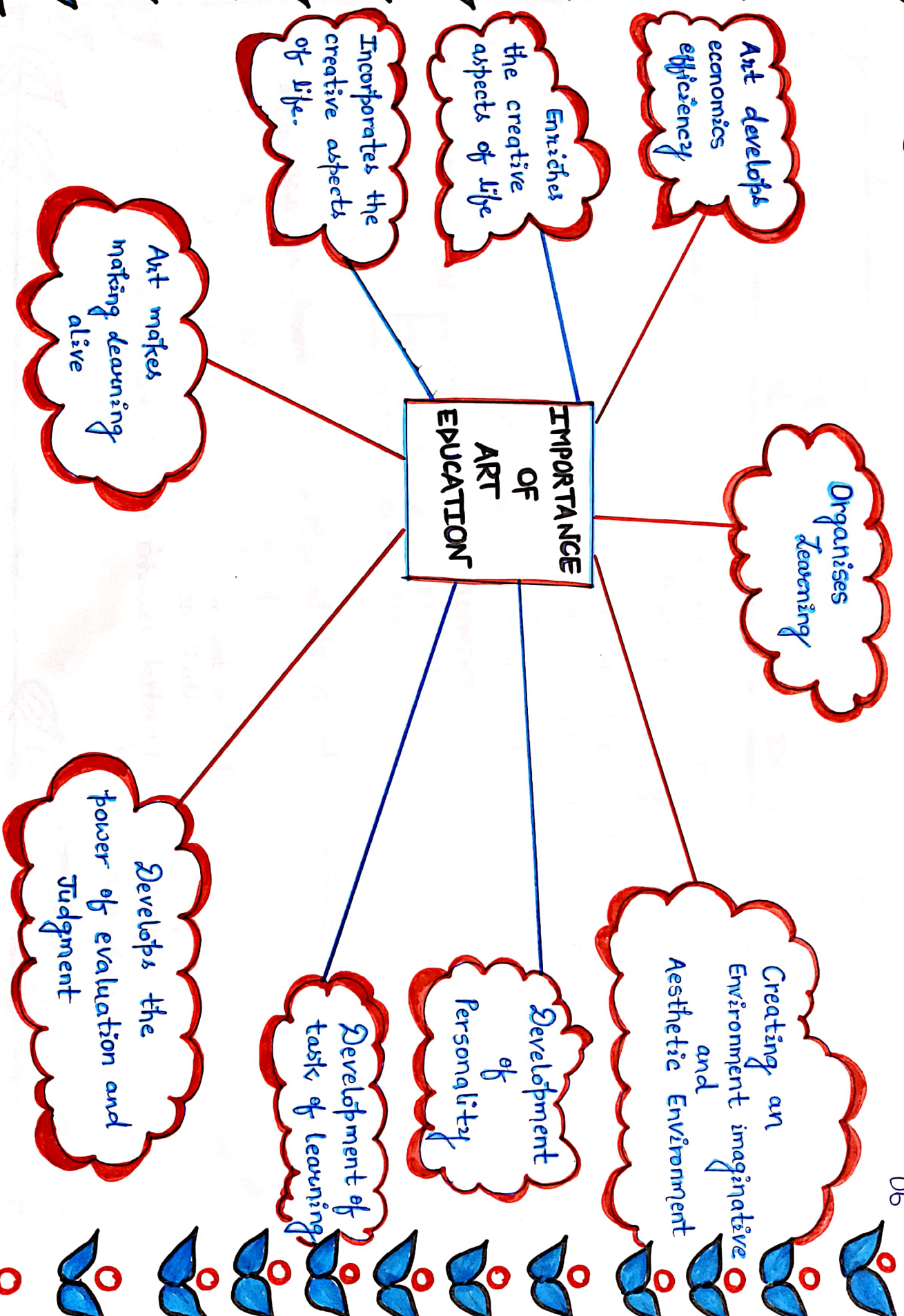
1. Entertaining
2. Imaginary social - issues
3. Based on
4. Full of moral values
5. Based on national issues

• **Types of Dialogue :-**

1. Background Dialogue
2. Dialogue showing Problems
3. Emotional dialogue
4. Sympathetic Dialogue
5. Instructional Dialogue

PLAYING
DRAMA





APPRECIATING VISUAL ARTS AND CRAFTS IN LEARNERS

07

- **Visual Art** → Art forms that create works that are primarily visual in nature. Examples :- ceramics, drawing, sketching, painting etc.

Art and craft as a subject in the school curriculum are typically taken for granted as a must for children and young one in formal education set-up. But whenever the past several years many schools have unfortunately cut down on arts in their school curriculum.

• **APPRECIATION**



• **Cognitive development**

1. It enhances creativity
2. Sharpens skills of decision making.
3. Enhances memory and visual learning.

• **Physical development**

1. Development of fine-motor skills.
2. Improvement of hand eyes coordination.
3. Enhances dexterity.

• **Social development**

1. Learn to appreciate art and culture.
2. Learn about the presentation of heritage.
3. Enhances self-expression.
4. Helps in socializing.
5. It boosts confidences.



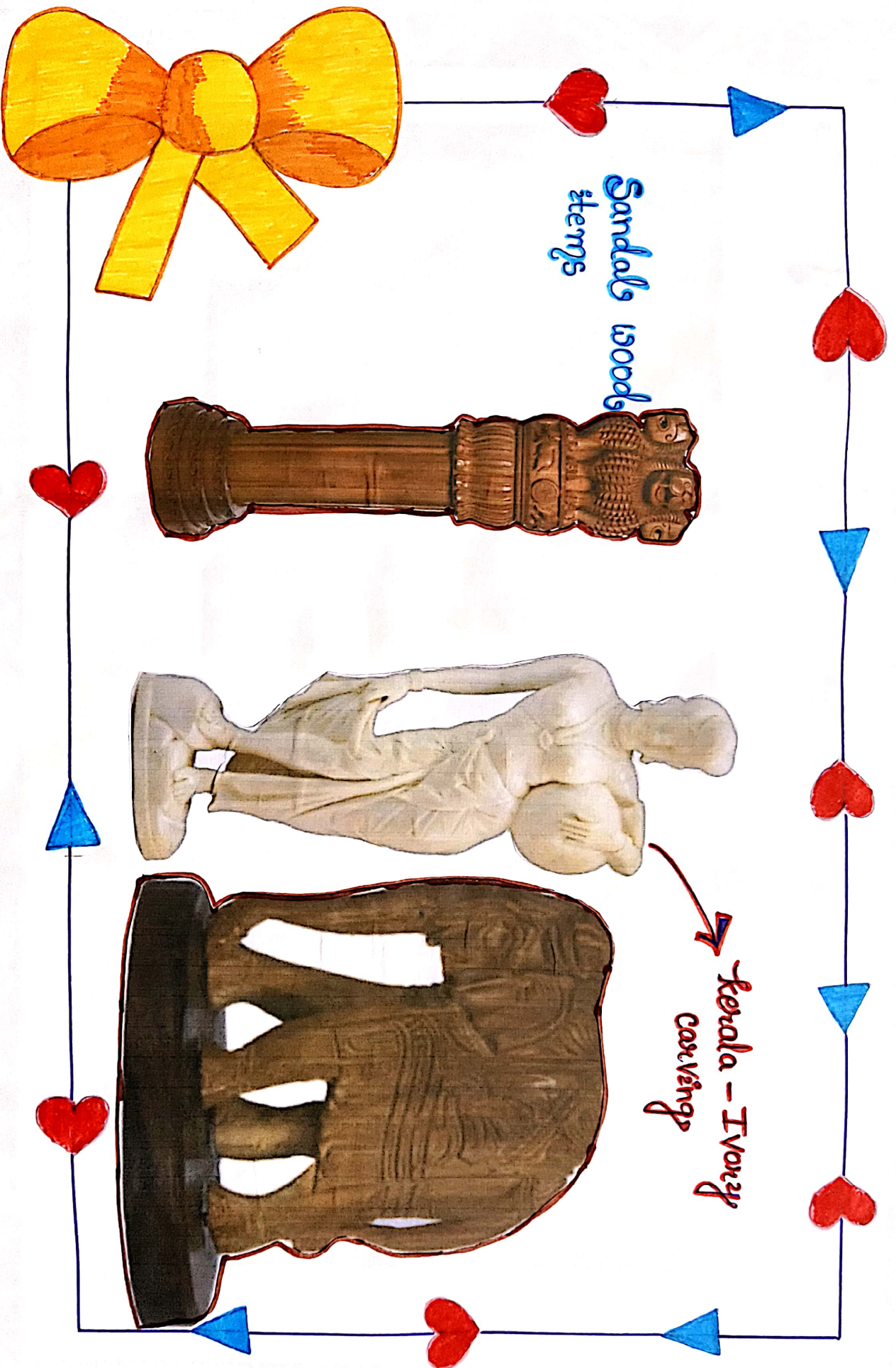
Concept of Handicrafts

Handicraft is such an artistic work which is useful as well as used for decorative and it is made by hand or with the help of simple tools such as arts have religious and cultural importance. Our country INDIA is considered to be the best centre of handicrafts it also has common items of daily lives. There are a similar things of life are also made up of different kinds of patterns to represent our rich heritage.

Creativity of artist is the pride of India itself on unique handicrafts in each region.

Examples of Indian Handicrafts are as follows :-

- Kashmiri Embroidered shawls
- Sandal-wood items
- Kerala - Ivory carving
- Mysore silk

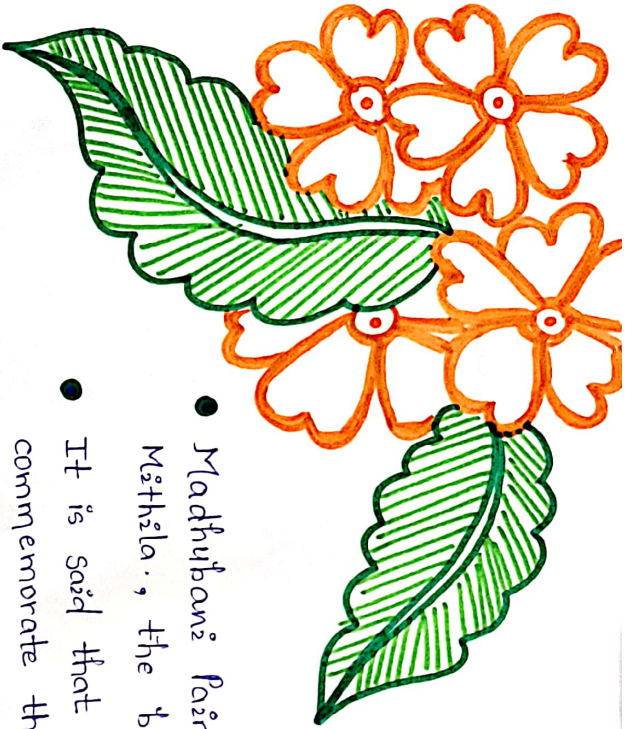


Kashmiri Embroidered Shawls

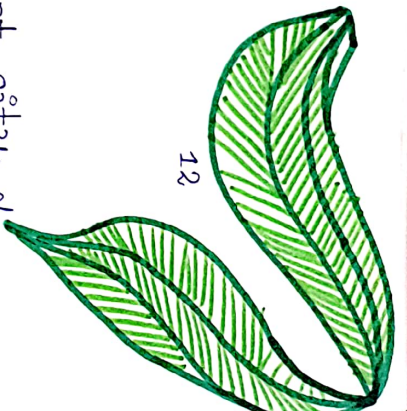


Mysore Silk





Mithila Painting



- Madhubani Painting is said to have developed in the ancient city of Mithila, the birth place of Sita daughter of King Janak.
- It is said that the Mithila Paintings were commissioned by the king to commemorate the marriage of his daughter to Lord Rama of Ayodhya. It was recognized as Kulin art or art of the Pure castes.
- It is traditional Indian art form noted for its use of local plants for colours, cow dung to treat the paper and bamboo sticks that serve as brushes not to mention the beauty and simplicity of the paintings themselves.
- Mithila Paintings mostly depict people and their association with nature and scenes and stories from the ancient epics.
- Natural objects like Sun, the Moon and religious plants like tulsi are also widely painted along with scenes from the royal court and social events like weddings.



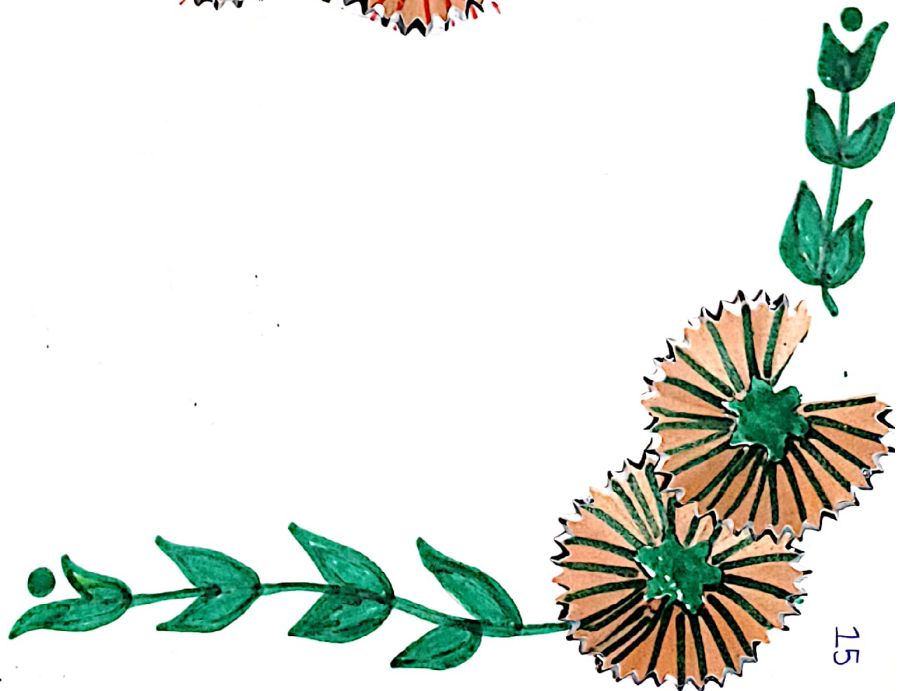
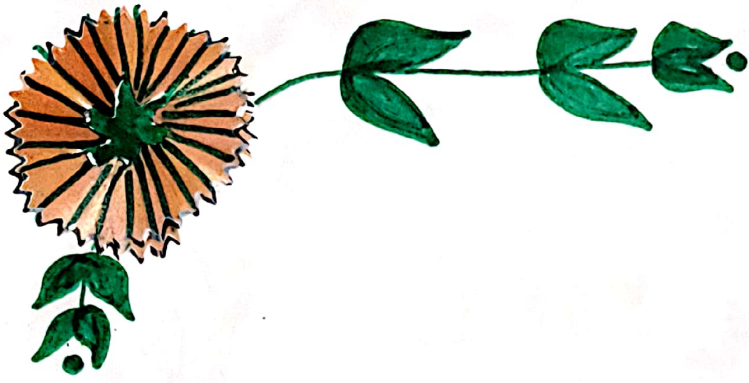


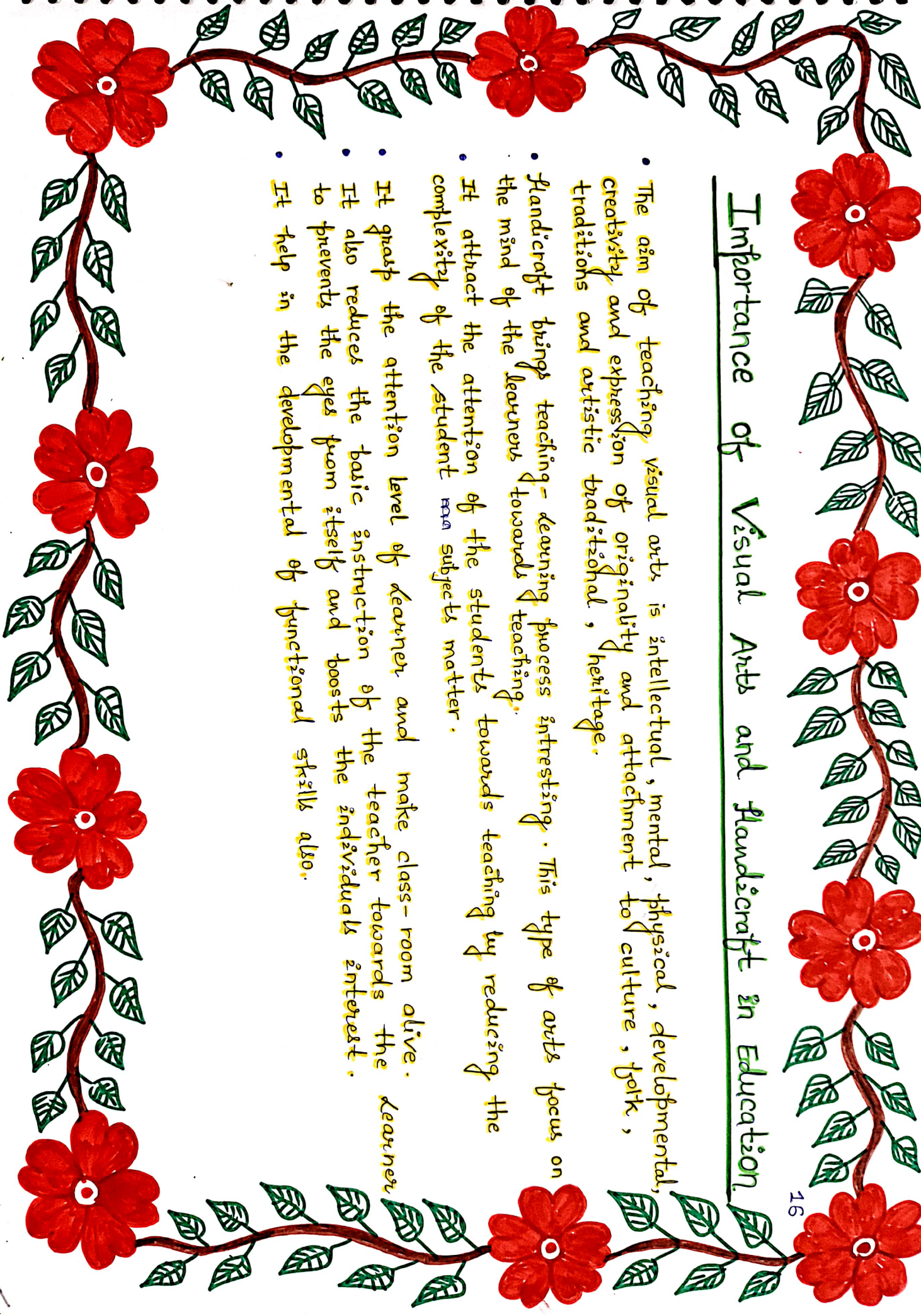


World
Hanging

14

Alternative Term

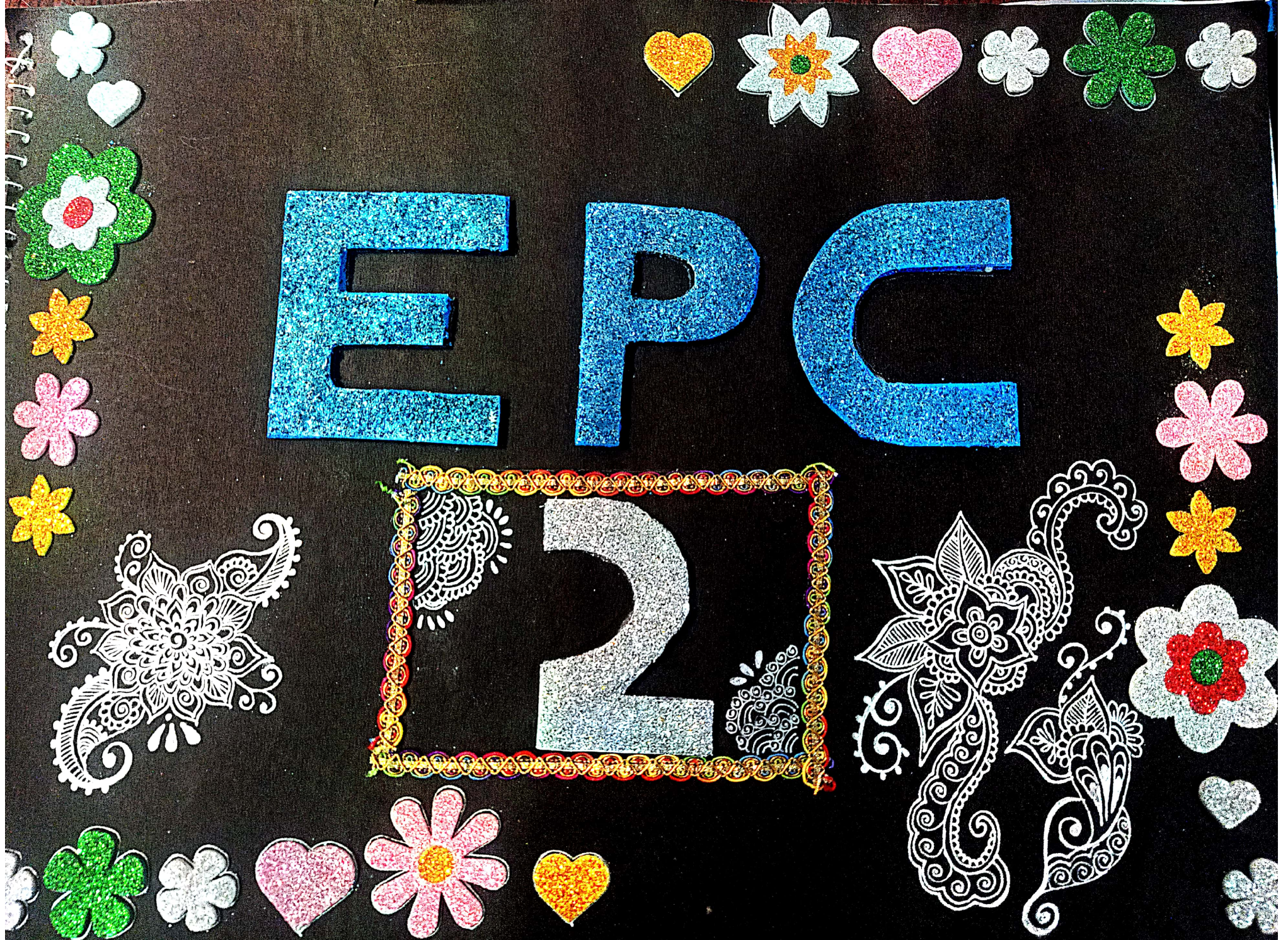




Importance of Visual Arts and Handicraft in Education

16

- The aim of teaching visual arts is intellectual, mental, physical, developmental, creativity and expression of originality and attachment to culture, folk, traditions and artistic traditional, heritage.
- Handicraft brings teaching-learning process interesting. This type of arts focus on the mind of the learners towards teaching.
- It attract the attention of the students towards teaching by reducing the complexity of the student ~~can~~ subjects matter.
- It grasp the attention level of learner and make class-room alive. learner
- It also reduces the basic instruction of the teacher towards the individuals interest. to prevents the eyes from itself and boosts the individuals interest.
- It help in the developmental of functional skills also.







THIS PROJECT
SUBMITTED BY



PRIYANKA
220019
B.Ed 1st YEAR
SESSION-2022-24



BEAUTY KUMARI
220013
B.Ed 1st YEAR
SESSION-2022-24



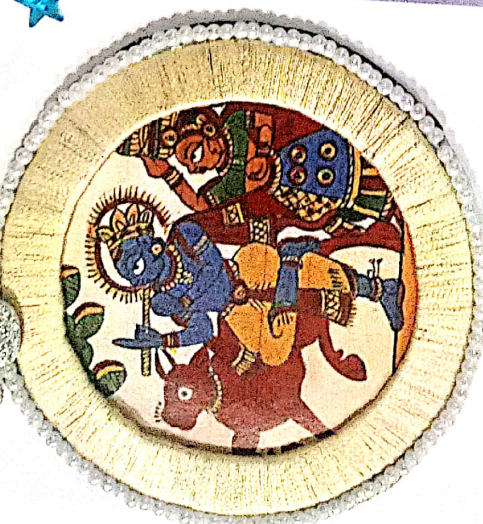
MANISHA KUMARI
220036
B.Ed 1st YEAR
SESSION-2022-24

SUBMITTED TO

SAVITA KUMARI

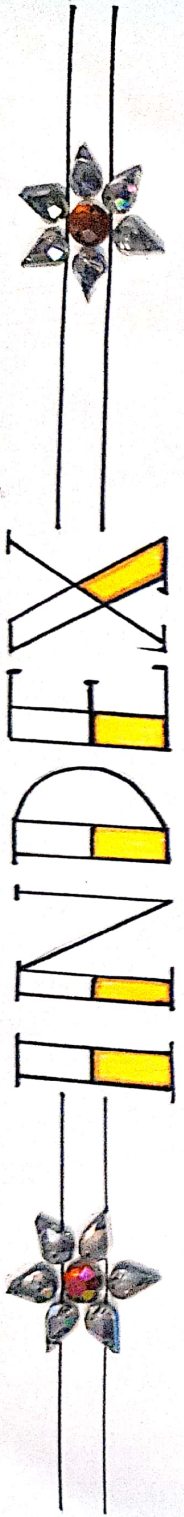


THE FOLK ART OF INDIA



India's folk art is very ancient and passed from one generation to another. Still, these old art forms are practised in various places in India. They became a part of Indian tradition and culture. During the period of Indian art, many art forms were advanced, and some vanished. However, the ancient folk art forms modified in colours and styles and still survive in society with their unique structure. The artists adopted the themes of art from epics, God and Goddesses. In the olden days, the artists used natural colours, mud, charcoal and leaves. They painted on canvas and cloth to bring antiquity to the art.





NAME AND ROLL NO. - PRIYANKA (220019) ,
BEAUTY KUMARI (220013) , MANISHA KUMARI (220036)
SUBJECT - EPC-2 CLASS - B-ED SESSION - 2022-24

S. No. TOPICS

Page No.

01. Madhubani Painting	01-04
02. Mysore Painting	05-08
03. Kalamkari Painting	09-12
04. Warli Painting	13-16
05. Phad Painting	17-20
06. Gond Painting	21-24
07. Rajput Painting	25-28
08. Pichhwai Painting	29-32



MADHUBANI PAINTING

3

Madhubani painting (also Mithila art) is a style of painting practiced in the Mithila region of India and Nepal. It is named after the Madhubani district of Bihar, India, which is where it originated. Artists create these paintings using a variety of mediums, including their own fingers, or twigs, brushes, nib-pens, and matchsticks. Madhubani painting (or Mithila painting) was traditionally created by the women of various communities in the Mithila region of the Indian subcontinent.

The paintings were traditionally done on freshly plastered mud walls and floors of huts, but now they are also done on cloth, handmade paper and canvas. Madhubani paintings are made from the paste of powdered rice. Madhubani paintings have remained confined to a compact geographical area and the skills have been passed on through centuries, the content and the style have largely remained the same. Now, Madhubani paintings have received **GI (Geographical Indication)** status. Madhubani paintings use two-dimensional images and the colours used are derived from plants. Ochre, lampblack and Red are used for reddish-brown and black respectively.

Mithila paintings mostly depict people and their association with natural and scenes and deities from the ancient epics. Natural objects like the sun, the moon, and religious plants like tulsi are also widely painted, along with scenes from the royal court and social events like weddings. In this paintings generally, no space is left empty; the gaps are filled by paintings of flowers, animals, birds and even geometric designs.

Mithila art has 5 distinctive styles :-

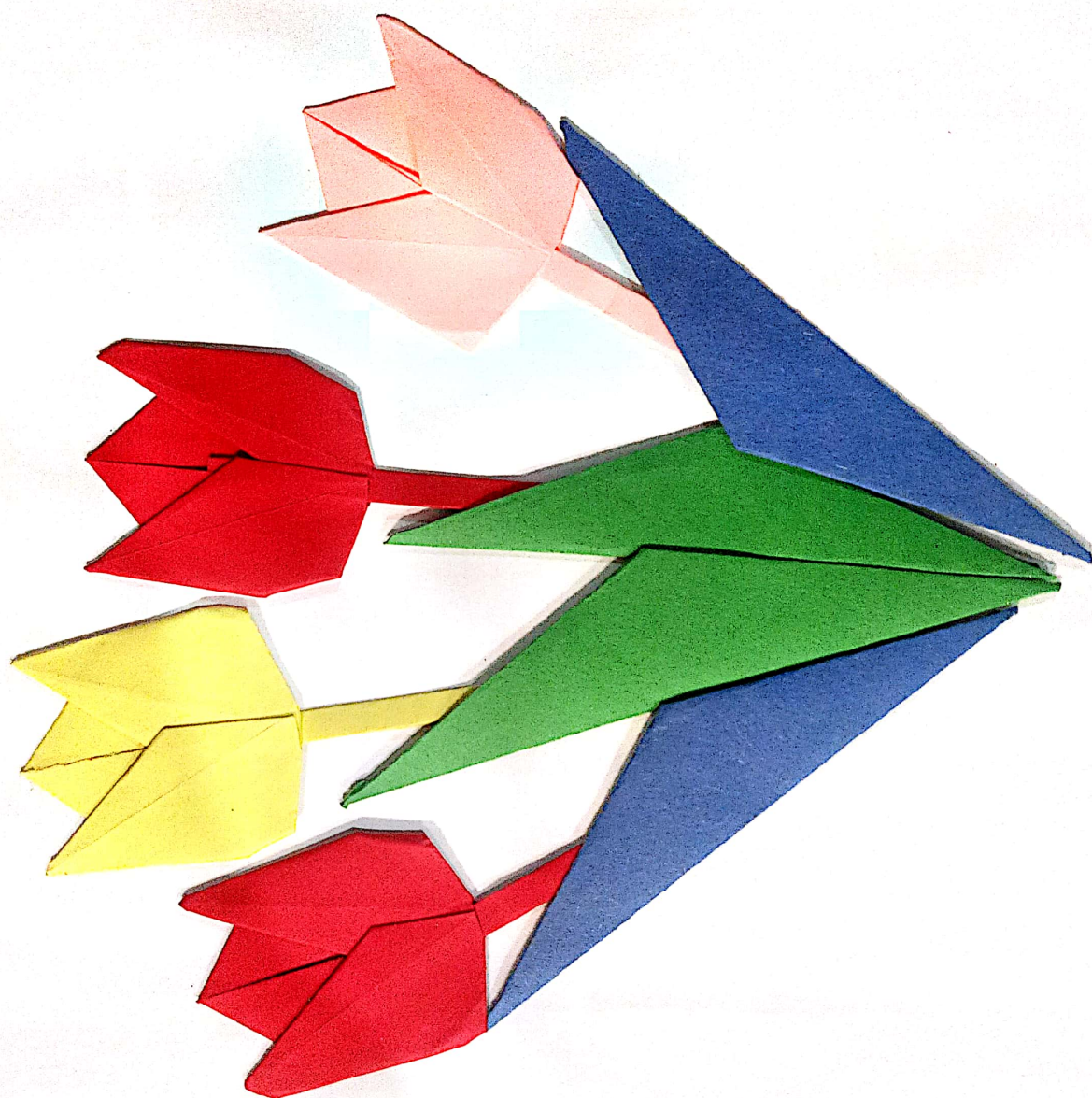
- Bharni
- Katchni
- ...

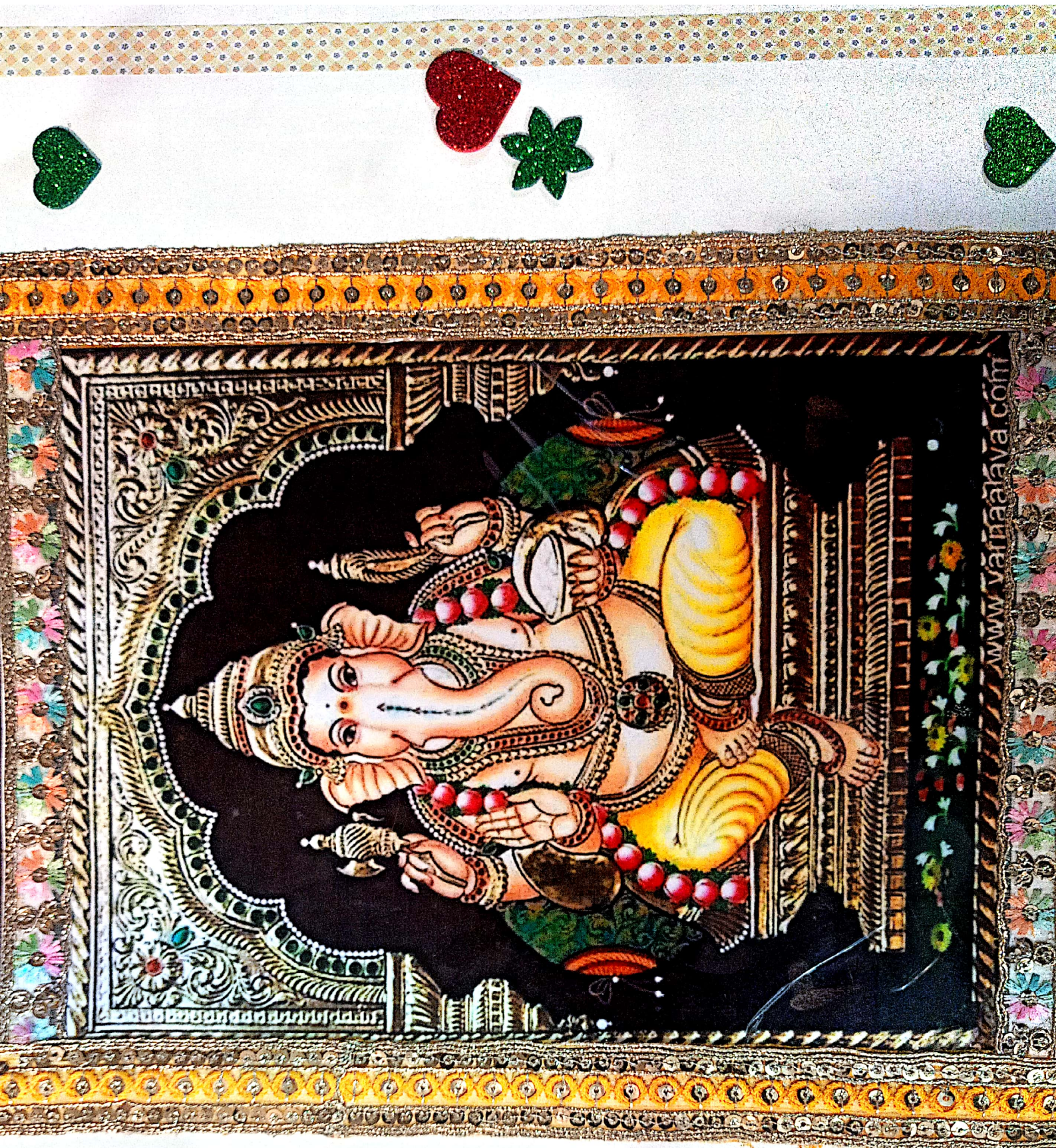
In the 1960s Bhairavi, and Tantrik styles were mainly done by Brahman women in India and Nepal. Their themes were mainly religious and they depicted gods and Goddesses paintings. People of other castes included aspects of their daily life and symbols, the story of Raja Shailash (guard of the village) and much more, in their paintings. Nowadays Madhubani art has become globalised art form, so there is no difference in the work on the basis of the caste system. They work in all five styles. Mithila art has received worldwide attention.

Awards

Madhubani painting received official recognition in 1969 when Sita Devi received the State awards by Govt. of Bihar. Mamta Devi from the village Jithwarpur has also got National Award. Jagdamba Devi from Bhejpuraul, Madhubani was given **Padma Shri** in 1975 and the National Award to Sita Devi of Jithwarpur village near Madhubani. Jagdamba Devi's foster son Satya Narayan Lal Kaur and his wife Moti Kaur are also well-regarded Mithila artists, and they won the National Award jointly in 2003. Sita Devi received Padma Shri in 1981. Sita Devi was also awarded by **Bihar Ratna** in 1984 and Shilp Guru in 2006.

In 1984 Ganga Devi was awarded by **Padma Shri**. Mahasundari Devi received the Padma Shri in 2011. Bama Devi, Yamuna Devi, Shanti Devi, Chano Devi, Bindeshwari Devi, Chandrakala Devi, Shashi Kala Devi, Leela Devi, Godavari Dutta, Asha Jha and Bharti Payal were also given the National award. Chandrabhushan (Rasidpur) Ambika Devi (Rasidpur), Manisha Jha were also given the National award. In 2020, Madhubani artist Pularsi Devi won the **Padma Shri** for contributions to art.





MYSORE PAINTING

7

Mysore Paintings is an important Indian paintings along with Mughal, Tanjore and many more paintings. Mysore Painting is a classical South Indian painting which originated around the Mysore city of Karnataka, India. Mysore Painting was given lot of prominence during Wodeyar reign. Mysore Paintings is more time consuming and requires more hard work. It is famous for its muted colours and the paintings use thinner gold leaves.

History of Mysore Painting

Mysore Paintings were further improved under the rulers of Wodeyar dynasty. The family members of these painters, who were in deep distress after the fall of Vijayanagara Empire got new life under Wodeyar dynasty.

Raja Wodeyar I rehabilitated the families to Srirangapatna. The successors of Raja Wodeyar namely Ranadira Kanteerava Narasimharaja Wodeyar and Chikka Devaraja Wodeyar further patronized and developed the paintings by making temples and palaces to be painted with mythological scenes. But the pity is that none of these paintings have survived due to constant war between Tipu Sultan / Hyder Ali with British. The lord Narasimha Swamy temple in Seebi (a place in Karnataka near Tumkur) was built by Nallappa has many beautiful wall paintings in the Mysore and Tanjore style.

The Mysore paintings were again revived again in the beginning of 19th century by Mummadi Krishnaraja Wodeyar. He also encouraged literature, dance, sculpture and painting. One can see beautiful paintings on the walls of Jagah Mohan Palace, Mysore Karnataka. These paintings include portraits of Mysore rulers and their family members and also paintings from the mythological stories.

Sritattvanidhi is the famous manuscript which has 1500 pages of illustrations of Gods and Goddess along with detail instructions to painters with regard to colour choice, method and the mood. Another literary source which gives explanation about the objective and principles of painting, methods of preparing colours and using brushes is the Visnudharmottara Purana, Abhilasitarthacintamani and Sivatatvatarnakara.

Methods and Technique of Mysore Painting

The beauty of Mysore Paintings is the intricate brush strokes, delicate lines, beautiful colors and gold leaf. They are not just paintings but it can be said that these paintings invoke feelings of devotion and respect. One has no words to express the beauty of these paintings.

The brushes were made using squirrel hair, camel hair and goat hair. Even the sketches were made using charcoal which was prepared by burning tamarind twigs in an iron tube.

The first step for making the Mysore painting is to make the base of the painting using paper, wood and cloth. The primary sketch of the image is drawn on the base of paper which is later pested on the wooden base. The wooden surface is prepared by using dry white lead, yellow ochre.

Later a paste is prepared by mixing zinc oxide and Arabic gum. It is known as "Gesso paste" which is the hallmark of all the traditional paintings of Karnataka. This paste

is used mainly to give slightly raised effect like embossing which is covered with gold foil.

Gesso paste was used to depict intricate designs like the clothes, jewellery, designs on pillars and arches. The next step is the colour the for objects like animals, sky, hill for which usually water colours are used. After this the most important parts of the paintings like faces, dress and ornaments are painted. Some of the basic colours used in the paintings are Red, Green & Blue. Earlier the colours were prepared by using vegetables & flowers. Firstly the painters coloured one colour completely where ever it was required and later moved to other colour.

Later after the painting is dried it is covered with thin paper and it is rubbed with soft glazing stone Kaslupada kallu. When the thin paper is removed the painting looks just stunning with gold and their bright colours and embossing of the painting.

Famous artists of Mysore Painting

Some of the famous painters are :-

K.S. Shreehari

and

M. Ramanarasiah.

KALAMKARI Paintings

Kalamkari is a type of hand-painted cotton textile produced in the Indian state of Andhra Pradesh. Only natural dyes are used in Kalamkari, which involves twenty-three steps. Under medieval Islamic rule, the term Kalamkari was derived from the words "kalam", which means "pen" in Persian, and "kari", which means craftsmanship in Persian. This term became popular under the patronage of the Golconda Sultanate.

• Where is Kalamkari from?

Kalamkari originated in the modern-day of Andhra Pradesh and Telangana. Several hundred years ago. It was first used to portray scenes from sacred texts such as the Mahabharata, Ramayana and Bhagavatam. These paintings were often displayed as decorative backdrops in temples, depicting the stories of deities.

• What are the different types/styles of Kalamkari art?

There are two types of Kalamkari painting: **Srikalahasti**, which is the freehand drawing style, and **Machilipatnam** which is the block-printing technique.

• Which motifs are used in Kalamkari?

The Tree of Life is one especially popular Kalamkari motif - deeply rooted while growing towards the sky, it connects the heavens, earth and underworld. It is also symbol of nourishment, with many animals feeding on its leaves, living in its branches and enjoying its shades. Peacocks, tigers and deer also frequently appear.

• What are the 23 steps of Kalamkari?

The process of creating a Kalamkari painting is as elaborate as the delicate and

10. detailed designs - there are 23 meticulous steps that include bleaching, softening and sun drying the fabric; preparing and mixing natural pigments; applying each colour individually; and rinsing the fabric between every color application.

• Which pen is used for Kalamkari art?

After tracing the central figure with charcoal sticks, the artist uses a finely pointed kalam, or a bamboo pen, dipped in the black kasimi liquid. The kalam is wrapped in wool that holds the liquid, and the artist squeezes this wool to release the ink while painting.

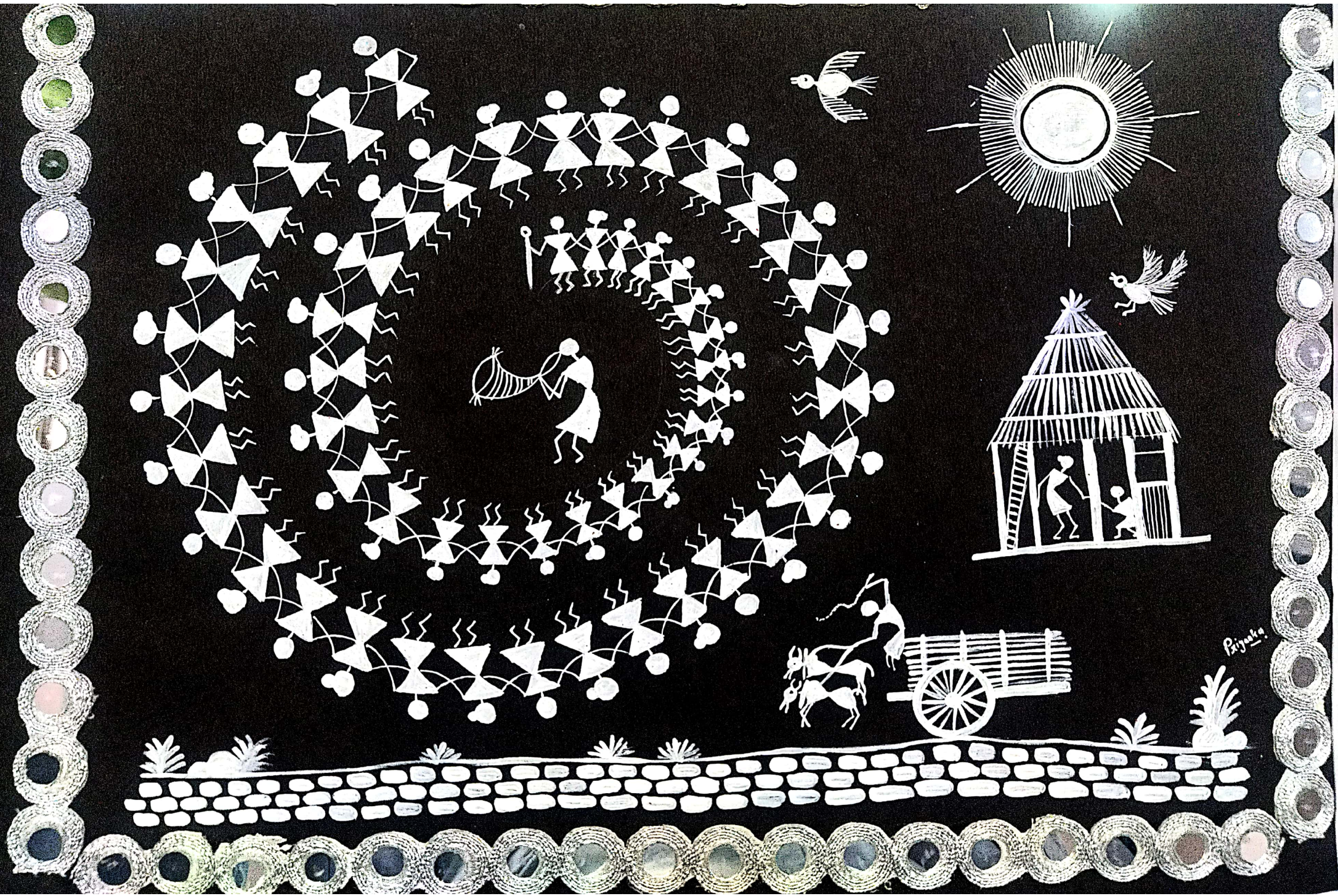
• Who is famous for Kalamkari painting?

One of the last surviving Kalamkari artists in Andhra Pradesh in the 20th Century was Lakshminiah, who is still known for his masterpieces like The Mahabharata and The Ramayana, which are in the collection of the Victoria and Albert Museum in London. Following in his footsteps, his son and descendants are also highly awarded Kalamkari artists.

• Is Kalamkari art still widely practiced?

Unfortunately, like many forms of traditional Indian art, Kalamkari is a generational art, meaning that typically a father or grandfather would train his children in the family trade. It has been preserved and passed down for many generations in this way. But now, given the plethora of career options available to make a steadier and more lucrative income, the children of most Kalamkari artists pursue careers in engineering, business or other fields. There are only about 16 remaining skilled Kalamkari artists living and working today, 10 of whom have won National Awards.





WARLI PAINTING

The great Warli folk painting is a form of tribal art mainly created by tribal people in the northern region of the Sahyadri Range, which comprises cities like Jawhar, Palghar, Dahanu, Talasari, Mokhada, and Vikramgarh of Palghar district, in India. This Warli tribal painting art form first originated in Maharashtra, which is still practised frequently. It is believed to be one of the oldest kinds of art forms in history. It is pretty popular in India and has a distinct charm everywhere it is expressed, but it has not gained much recognition outside its territory. Warli art is a folk art of Maharashtra is a set of basic geometric shapes: a circle, a triangle and a square.

• History and Origin of Warli Painting

The Warli tribe is one of the largest tribes in India, located outside of the city of dreams - Mumbai. Even though they were close to one of India's largest cities, the Warli rejected contemporary cultures and lifestyles.

These paintings seem to be nothing more than Warli figures drawn in whites on such dark walls to the untrained eye, but a closer inspection shows that Warli is far more than meets the eye. To many, Warli art story may seem like just a simple art form of India. Still, the Warli tribes located in mountains and coastal regions in and around Maharashtra and Gujarat's borders are Warli painting states. If you ask how old Warli art is, then the origin of Warli art can be traced back to around 3000 BC and seems to have an enigmatic appeal to it. Even though the tribal art style dates back to the 10th century A.D., the Warli paintings form was not known until the 1970s. Although the primary way of life and a significant food source for the tribe was farming, they had great respect for nature and wildlife for the resources they provided for life. On various occasions, this type of painting was mainly centred around the concept of mother nature and its elements. A fascinating fact about Warli artists is

that they used their clay huts as the backdrop for their masterpieces, much like how ancient people utilized their cave walls as canvases.

• Designs and Styles of Warli Paintings

When one looks at a Warli painting, the intricate geometric patterns of flowers, hunting scenes, wedding rituals, and other activities make the paintings stand out. A particular appeal to the painting comes from its beautiful yet delicate patterns. The current trend among fashionistas and home goods brands is to choose these designs and models. As a result, Warli tribal art can be found in various products and places around the world.

• How to make a Warli Painting?

Warli paintings are traditionally practised on mud walls with white paste. This white paste is rice, water, and gum that acts as a critical catalyst. Other bamboo sticks, chewed at the end, act as a paintbrush. They usually carry a close resemblance to prehistoric cave paintings. If you were to perform a Warli art design background today, you could use white paint to draw the caricatures with an ochre experience. Warli paintings have a limited design vocabulary consisting of dots and dashes arranged linearly to portray a scene. However, one of the most prominent aspects of Warli art is the Rampa dance.

• Evolution of Warli Paintings

Over the years Warli paintings have evolved drastically. Today the conventional paints and paintbrushes can create an end product just the same! Other than that, Warli painting, painting of Maharashtra are not just restricted to the traditional mud walls anymore. They've expanded on a great scale in the home decor industry and seem to be growing day by day. They are becoming increasingly popular and highly liked, from pots and vases to bedsheets and curtain prints. The textile and clothing industry is fond of this beautiful Indian art form, not just the home decor world.



PHAD PAINTINGS

19

Drenched in tradition and history, India's varied folk art forms have narrated stories for centuries through vibrant visual representation. And while each one is culturally significant, Phad Painting of Rajasthan particularly stands out for its unique history, origin and the efforts put into its survival.

• The Origin of Phad - A Blend of Performance and Visual Art

A 700-year-old legacy passed down over generations within a single family, Phad finds its origins in Shahpura, near Bhilwara, Rajasthan. Phad is a type of scroll painting that narrates elaborate religious stories of local deities and gods. Created as travelling or mobile temples, these traditional paintings were carried by priest-singers of the Rabari tribe, called Bhopas and Bhopis, who would sing and perform stories of their local deities - Devnarayanji (a reincarnation of Vishnu) and Pabuji (a local hero). The Phad painting would be unrolled, or unfolded after sunset, and the performance in front of village members, would last into the night. This is perhaps why the paintings are called 'Phad', which means 'fold' in the local dialect.

While the male priest (Bhopa) would sing and narrate the story depicted in the Phad painting, his wife (Bhopi) would accompany through song and dance, while also putting a spotlight on the corresponding section in the painting, using a lamp. A two-string instrument called the 'mavanhatta' would be used in performance.

• Of Technique, Colours and Characteristics

Phad artists need to be extremely skilled, adhering to techniques taught by ancestors. Depending on the complexity, it can take between a few weeks to a few months to complete an artwork.

Phad paintings are created on hand-woven coarse cotton cloth, which is soaked overnight to thicken the threads. It is then stiffened with starch from rice or wheat flour, stretched, dried in the sun and rubbed with a moonstone to smoothen the surface and give it a sheen. The entire process of making a Phad painting is completely natural, with the use of natural fibres,

and natural paints sourced from stones, flowers, plants and herbs. The paints are handmade by the artists, and mixed with gum and water before applying to cloth.

• Traditions of the Past

The entire process of creating a Phad painting is steeped in rituals and traditions. In the olden days, the first brush stroke was made by a virgin girl from the artist's family, following which the painter divided the canvas into various sections, according to the parts of the story being depicted. The techniques of Phad painting were only taught to those who'd remain in the Joshi family, not those who would leave it. So, while daughters were not taught the art, daughters-in-law who became part of the family were.

• Revival, Survival and Change in Modern Times

Since the tradition of Phad art was so closely guarded, it was natural for the artform to face the threat of fading away. With a desire to preserve and revive the artform, Shree Lal Ji Joshi, a renowned Phad painter and Padma Shri awardee, challenged all the orthodox ideas associated with the Phad tradition, and decided to set up a Joshi Kala Kunj in Bhilwara, Rajasthan in 1960 - a school where artists from outside the Joshi family were taught the art of Phad. Under the patronage of his sons, Gopal and Kalyan Joshi, this revival effort expanded, with the rebranding of the school to Chitrashala, in 1990. Over the years, more than 3,000 artists have been trained at Chitrashala. Similar efforts were also made by other members of the extended Joshi family. Not only did all these revival effort focus on preserving the artform, but also the painstaking processes of making natural paints and following traditional techniques.

Since the very core of Phad paintings was storytelling, Kalyanji Joshi started depicting characters besides Devnarayanji and Pabuji in Phad paintings. Stories and characters from Ramayana, Mahabharata, Hanuman Chalisa and even Panchatantra, were introduced, making the paintings more appealing to a larger audience.

Art forms like Phad preserve folklore and stories that have travelled through centuries and reflect India's glorious culture.



GOND PAINTING

23

Gond painting is a famous folk art of the Gond tribal community of central India. It is done to preserve and communicate the culture of the Gond tribal community. Gond tribal art includes folk dances, folk songs, and Gond paintings.

The present-day Gond paintings have evolved from **Digna** and **Bhittichitra**.

The Gonds paint Digna, a traditional geometric pattern on the walls and floors of the houses. Bhittichitra is painted on the walls of houses, and these paintings include images of animals, plants, and trees.

Women use natural colours to paint the walls and floors of their homes.

• Gond Tribe

The Gond tribe is one of the largest tribal communities in India. These tribals live in Madhya Pradesh, Telangana, Bihar, Maharashtra, Odisha, and Andhra Pradesh. The main occupation of the Gond tribe is agriculture or daily wages.

The word Gond comes from 'Kond' which means green mountains and tribal people are called Gondis as they live mainly in the lush green mountains of Madhya Pradesh.

The Gond tribe believes that seeing a good image brings lots of good luck to them. Hence Gond tribal paintings are made on various festivals, rituals and ceremonies such as Diwali, Karva, Nag Panchami, birth, marriage, etc.

• History and Origin of Gond Painting

In the 1980s, J Swaminathan was the director of the Bharat Bhavan Museum in Bhopal. He wanted to exhibit urban and tribal art together. For this purpose, he sent some of his students to various villages in Bhopal district in search of various tribal Gond artists.

There they found very talented young men and women. One of them was Jangarh Singh Shyam, an exceptionally talented painter. The walls of his house were proof of his magnificent artwork and he was equally excited to come to Bhopal and try new mediums of painting.

Jangarh Singh Shyam

Shri Jangarh Singh Shyam was the first tribal artist to use canvas and paper for his artwork. He was a Pardhan Gond artist of the village Patangarh in Dindori district, Madhya Pradesh. Pardhan Gonds are one of the subgroups of the Gond community. Pardhan Gonds are known for their artistic skills such as music, singing, painting etc.

Gond Painting Themes & Designs

The themes and motifs of Gond painting are drawn from local flora and fauna, deities and urban culture. Gond paintings mainly depict the following subjects -

1. Pictures of peacocks, birds, crabs, mythical beasts, lizards, lions, tigers, deer, snakes, wild boars, cows, monkeys, elephants, horses, fish etc.
2. Mahua Tree as Tree of Life. Mahua flowers, fruits, seeds, and leaves are used for many purposes by the Gond.
3. Modern design such as airplanes, bicycles, cars, technology etc.
4. Myths, legends, and aspects of the daily life of Gond people.
5. Hindu gods such as Lord Shiva, Lord Krishna, Lord Ganesha, etc.
6. Local deities like Phulvari Devi (Goddess Kali), Jalharin Devi (River Goddess), Marahi Devi, etc.
7. Folktales.

Gond Painting Signature Pattern & Styles

Each Gond artist uses his own distinctive pattern and styles to fill the images. These distinctive patterns are called Signature Patterns. Some of the patterns used in Gond paintings are:-

1. Dots
2. Fine lines
3. Curved lines
4. Dashes
5. Fish Scales
6. Drops of Water
7. Seed Shapes
8. Geometrical Shapes etc.



RAJPUT PAINTING

27

The Royal State of Rajasthan played an important role in the origination of the unique art form of Rajput Paintings, in between the late 16th and early 17th century A.D. A strong Mughal influence can be seen in the Rajput Paintings since most of the princely states in Rajasthan were ruled by the Mughals. Evolved with distinct styles, every Rajput Kingdom has many similarities and dissimilarities.

The dominance of Chaurapanchasika group in the Rajasthani Rajput Paintings is the most observant and distinctive feature. Ramayana and Mahabharata are the greatest epics and one of the main themes in Rajasthani Paintings. Along with this, the landscapes, humanly figures, and even godly figures like that of Lord Krishna, are also depicted. Sometimes, portraits of the ruling family who often engaged in hunting activities were popular. Hindu Mythology was narrated in the Rajput Paintings.

The Rajput Paintings showcase the temple palaces, Havelis, inner chambers in the different forts. Different colours are used to paint, which are derived from different plants, minerals, stones, and even gold and silver.

• Schools under Rajput Paintings

Rajput art schools began developing distinct and attractive styles in the late 16th century. Amalgamating the different indigenous art forms and mythology, the paintings also had a foreign influence, including the likes of European, Mughal, Chinese, and Persian styles. Broadly, Rajasthani Paintings were divided into four distinct schools, having within, several artistic styles along with some substyles within. The different schools are as follows:

1. **Mewar School** :- Chavand Style, Nathdwara Style, Dargach Style, Udaipur style, Sawai style
2. **Malwar School** :- Kishangarh style, Bikaner style of painting from Bikaner, Jodhpur style, Pali style and Ghaneraso style.
3. **Hadoti School** :- Kota Style, Bundi Style, Jhalwar style
4. **Phundari School** :- Amber style of Painting, Jaipur style, Shekhawati style, Uniara style

5. Kangra School
6. Mithu School

Reasons for the increasing popularity of Rajput Paintings

- i) The economic prosperity of the community
- ii) The revival of 'Vaishnava' cult
- iii) Bhakti movement

Religious followers like Tulsidas, Meerasbai, Ramanuja, Kabir, Ramanand etc. while Rajput Paintings were affected by the continuous attacks by the Mughals, Mewar never came under the control of the Mughal Empire. Hence, Rajput Paintings flourished in the Mewar region and is often called the 'purest form' of art. Similarly, regions of Bundi, Kota-Kalam, Bikaner, Jaipur, Kishangarh remained popular for their style of Rajput Paintings.

Art under the Rajput Empire

While the Mughal painting is more objective, secular, academic, and dramatic in nature, Rajput Painting is a reflection of art which was both princely and popular. Rajput Paintings reflected a more lyrically layered, static and contemplative way of life.

The real 'discoverer' of the Rajput Paintings is Coomaraswamy. He nicely pointed out the various intrinsic qualities of the art form and emphasized the fact that Rajput Paintings should be viewed with its cultural, linguistic, and historical contexts.

Rajput Paintings are the exact expression of the feudal society, warlike, aristocratic factors emphasizing on 'clans'. The personality of the 'ruler' from the clan is reflected by the artistic works of Rajput Paintings.

PICHHWAI PAINTING

29

Pichhwai (also pichwai, pichharai, pichvai etc), literally meaning 'that which hangs from the back' from the Sanskrit words "Pichh" means back and "wai" means hanging, are large devotional Hindu painted pictures, normally on cloth, which portray Krishna. They are mainly made to hang in Hindu temples of the Pushtimarg devotional tradition, especially the Shrinathji Temple in Nathdwara, Rajasthan, built around 1672. They are hung behind the idol of Shrinathji, a local form of Krishna and the centre of Pushtimarg worship, to depict his leelas. Aurangabad was another area associated with them. The purpose of pichhwais, other than artistic appeal, is to narrate tales of Krishna to the illiterate. Temples have sets with different images, which are changed according to the calendar of festivals celebrating the deity.

Nathdwara painting covers these and similar works in other genres, especially Indian miniature paintings. Like the Pushtimarg tradition, they originated in the Deccan, but are now mainly associated with Western India.

• Iconography.

The main image portrayed in Pichhwai paintings is Shrinathji. This 700+ years old form of Krishna, is the presiding deity worshipped at the Shrinathji Temple with many paintings showing the rituals and worship offered to the deity in the temple. Modern pichhwais may also portray other forms of Krishna worshipped in the Pushtimarg tradition such as Dwarkadish, the presiding deity at the Dwarkadish Temple. Whilst these paintings focus on Shrinathji, paintings often depicts other deities in the tradition such as Yamunaji, Goswamis such as Vallabhacharya and other priests.

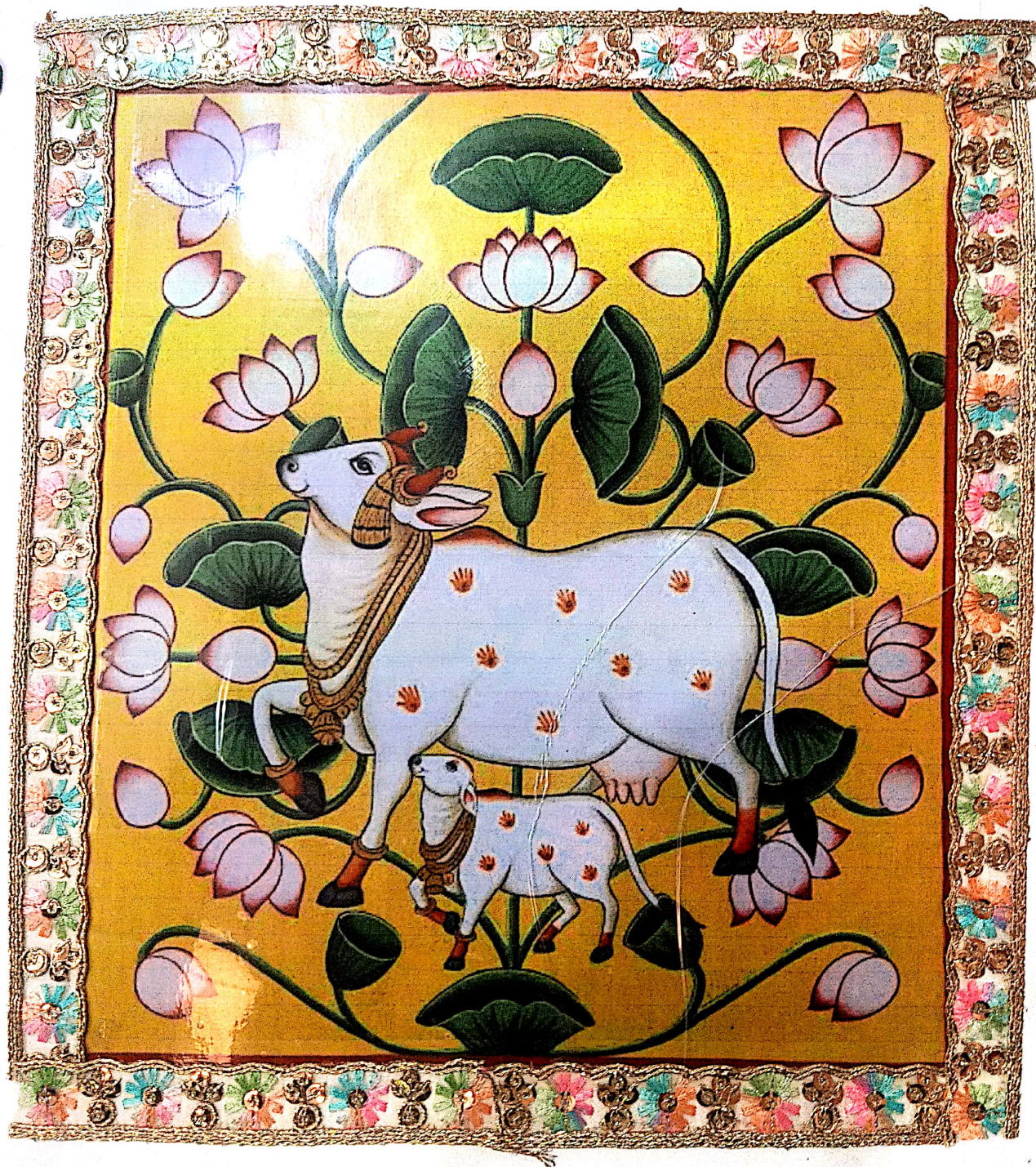
• Themes

Pichhwais have two main functions within the Pushtimarg Sampradaya. One is used as backdrops on the inner sanctums in the shrines, they are changed daily and are designed in accordance to the season, festival and rituals of that day. Other pichhwais are artists' documentation of the worship in the faith. Each festival and ritual within the faith is an elaborate affair with a pichhwa showcasing the adornment, emotions, mood, music, food and dancing that encompasses the worship. With daily worship of Shrinathji have 8 different formal viewings, pichhwais may often depict the eight different adornments associated with each viewing. Festivals such as Govardhan Puja, Sharad Purnima, Raslila, Holi alongside other prominent festivals in Pushtimarg are depicted with vivid detail on the modes of worship & the items used. These Pichhwais often also act as a historical documentation on how and who participated in these festivals throughout the doctrine's history.

• Modern Day Production

Pichhwais have become the main export of Nathdwara and are in much demand among foreign visitors. The artists live mostly in Chitron ki gali (street of paintings) & Chitrakaron ka mohallah (colony of painters) and are a close community with constant interaction. Often a pichhwa painting is a group effort, where several skilful painters work together under the supervision of a master artist.

There has also been a push by other artists and designers to preserve and showcase this art form to a wider, international audience. Designers have utilised the traditional colours, printing techniques and pattern styles associated with pichhwa, in clothing attire and showcase them on international platforms such as Lakmé Fashion Week.











GITANJALI
CHAUDHARY
B.Ed 1st YEAR
(2022-24)
ROLL- 220053



POOJA RAJ
B.Ed 1st YEAR
(2022-24)
ROLL- 220051



ABHINASH KR. SINGH
B.Ed 1st year
(2022-24)
ROLL- 220001



VISHAKHA
B.Ed 1st YEAR
(2022-24)
ROLL- 220009



PRIYA KUMARI
B.Ed 1st year
(2022-24)
ROLL- 220098



ANSHU PRIYA
B.Ed 1st YEAR
(2022-24)
ROLL- 220074



SWETA RANI
B.Ed 1st YEAR
(2022-24)
ROLL- 220092







ARTS &
CRAFTS

Arts And Crafts

Arts and crafts comprise a whole host of activities and hobbies that are related to making things with one's own hands and skill.

Art is described as an unstructured and open-ended form of work; that expresses emotions, feelings, and vision.

Craft denotes a form of work, involving the creation of physical objects, by the use of hands and brain.

Art relies on artistic merit.

Craft is based on learned skills and technique.

Art is well known for serving an aesthetic purpose.

Art gives particular attention to ideas, feelings and visual qualities.

Craft gives stress on the right use of tools and materials, and the application of technique.

There is a flow of emotion in art, which emerges from heart and soul. The Craft is the product of the mind.

Craft can be quantified easily which is not in the case of art.

The duplicability of art forms is not possible while Craft forms can easily be copied. Art is the consequence of an individual's innate ability. Craft is the result of learned ability and experience.





Index

कथकली
में सामंती के संरक्षण में नृत्य -
रामानंदम तथा कृष्णादम का किासु
महाराष्ट्र की कहानियां कही जाती
तथा परम्पराएं कथकली के उद्भव को
कथा अर्थात् कहानी और कलीवाली
है। अन्य प्राचीन नृत्य (संस्कृतनाट्य
म है। यह संगीत, नृत्य और
जन हैं।
तथापि, सामंती
साथ-साथ, कला को
विवशान
कली के
में













Index

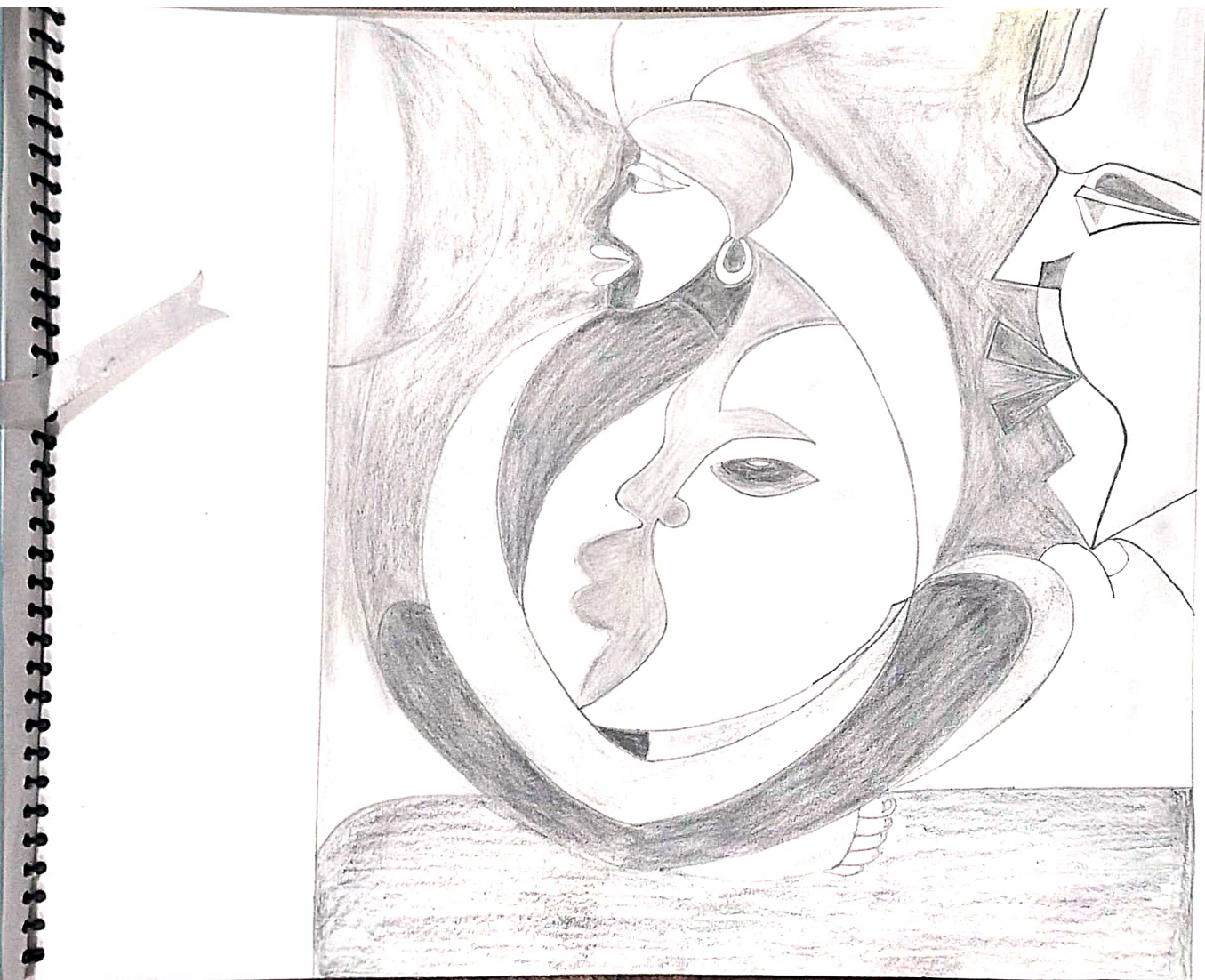
चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली

चित्रकला के क्यूबिस्ट आंदोलन ने यूरोप के क्यूबिस्ट आंदोलन से प्रेरणा प्राप्त की। इस शैली के अंतर्गत, वस्तुओं को पहले विभाजित किया जाता था, फिर लेपित किया जाता था और उसके बाद पुनः संयोजित किया जाता था।

चित्रकला ने सरा प्रक्रिया को अमूर्त कला, आरूपों का प्रयोग कर कैनवास पर पुनर्संरचित किया। उन्होंने रेखाओं और रंग के बीच विच्छेद सभी संतुलन प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

भारत के सर्वाधिक प्रसिद्ध क्यूबिस्ट चित्रकारों में से एक एम.एस. दुसन थे, जिन्होंने 'शेमांस' का मानवीकरण नाम से चित्रकलाओं की श्रृंखला आरम्भ की।

इन अमूर्त लक्ष्यार्थों का प्रयोग करने वाली चित्रकलाओं में उन्होंने बारंबार घड़ों के रूपांकन का प्रयोग किया है क्योंकि गति की तरलता को चित्रित करने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ था।





अरबेस्क डिजाइन

- इस्लामिक शासकों ने मस्जिदों और मकबरों के चारों ओर मीनारों का उपयोग प्रचलित किया। उनके निर्माणों को जोड़ने वाले एजेंट के रूप में गार्ड का उपयोग किया जाता था।
- इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में मानव और पशु आकृतियों के उपयोग से बचा गया।
- हिन्दू वास्तुकला जहाँ बहुत शंकीर्ण हो गई थी, वहीं इंडो-इस्लामिक वास्तुकला ने इसमें विशालता, व्यापकता और बृहदता का समावेश किया।
- जहाँ पिछली संरचनाओं में अलंकरण के साधनों के रूप में मूर्तियों का उपयोग किया जाता था, वहीं इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में अलंकरण के साधनों के रूप में सुलेखन का उपयोग किया गया था।
- अलंकरण के लिए अरबेस्क विधि का भी उपयोग किया गया था। अरबेस्क से आशय ज्यामितीय अनसुपटिक अलंकरण के उपयोग से है और इसकी विशेषता एक सतत, तना होता था। यह पुनरावृत्ति, द्वितीयक तने की श्रृंखला का निर्माण करते हुए निश्चित अंतराल पर विभाजित होता था या इसे मुख्य तने से मिलाने के लिए वापस मोड़ा जाता था, जिससे एक सजावटी पैटर्न का निर्माण होता था।
- सजावटी पैटर्न से लेकर समरूपता की भावना आत्मसात् करने तक, इस अवधि की वास्तुकला में भारी पैमाने पर ज्यामिति के सिद्धांतों का उपयोग किया गया।
- मस्जिदों में जाली का जटिल काम किया गया था। इस्लाम धर्म में प्रकाश के महत्व का प्रतिबिम्ब है।

